ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 09 दिसम्बर 2018

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 09 दिसम्बर 2018 से 15 दिसम्बर 2018

मार्गशीर्ष शु. – 02 ● वि० सं०–2075 ● वर्ष 60, अंक 49, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 194 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,119 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, पश्चिम बंगाल के तत्त्वावधान में ऋषि निर्वाण दिवस सम्पन्न

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, पश्चिम बंगाल के सभी विद्यालयों के आर्य समाजों के द्वारा ऋषि निर्वाण दिवस का आयोजन किया गया। इस वर्ष उपसभा की ओर से सर्वप्रथम विशेष यज्ञ, भजन एवं प्रवचन का आयोजन किया गया। तत्पश्चात् डी.ए.वी. मॉडल स्कूल दुर्गापुर के विद्यार्थियों को साथ लेकर दुर्गापुर स्थित इच्छापुर के समीप हाड़ीफेला गाँव में जाकर आर्थिक रूप से पिछड़े बच्चों के साथ ऋषि निर्वाण दिवस मनाया गया और गरीब बच्चों को सर्दी के लिए स्वेटर वितरण किये।

दुर्गापुर स्थित सी.आर.पी.एफ. कैम्प में जाकर विद्यार्थियों ने मिठाईयाँ, दीये, एवं दीपावली के शुभकामना पत्र देश के जवानों को प्रदान करके दीपावली का त्योहार मनाया। कर्नल विनय सिंह ने विद्यार्थियों के साथ सेना के अनुभव साझा किये। उनके अनुभवों को सुनकर सभी विद्यार्थियों का मन उत्साह से भर गया। श्रीमती पापिया मुखर्जी (प्रधान, आ.प्रा.प्र. उपसभा, पश्चिम बंगाल) ने देशभक्त जवानों को नमन करते हुए छात्रों को देशभक्ति का महत्त्व समझाया।

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, पाण्डेश्वर में ऋषि निर्वाण दिवस मनया गया जिसके अंतर्गत देवयज्ञ, भजन प्रस्तुति हुई और वैदिक विषयों पर प्रश्नोत्तरी एवं आर्य समाज के दस नियमों पर आधारित प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया। डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, मधुकुंडा में भी यज्ञ, प्रवचन का आयोजन किया गया। यज्ञ के पश्चात् मंत्रोच्चारण एवं श्लोकोच्चारण प्रतियोगिताएँ भी करवाई गई। जिसमें सभी विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। अंत में शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

विश्वशांति यात्रा द्वारा कोटा में घर-घर पहुँचाया वेद का संदेश

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द के संदेश को लेकर गुजरात के टंकारा से दिल्ली होते हुए कोटा पहुँची विश्व शांति यात्रा ने कोटा के विज्ञान नगर में रोड़ शो किया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि आचार्य आर्यबन्धु के नेतृत्व में बाईक यात्रा के सदस्यों ने विज्ञान नगर क्षेत्र में प्रभात फेरी निकाली गई। जिसमें सबसे आगे यज्ञरथ चल रहा था और आर्यजन यज्ञ कर रहे थे। उसके पीछे प्रचार वाहनों एवं बाईकों पर ओ३म् की ध्वजा लगाये शांति मिशन के सदस्य चल रहे थे।

विज्ञान नगर क्षेत्र का परिक्रमण करने के उपरान्त शांति संदेश यात्रा का आर्यसमाज विज्ञान नगर एवं पतंजलि के योग साधकों द्वारा अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर आचार्य आर्यबन्धु ने अपने संदेश में कहा कि भ्रष्टाचार, आतंकवाद, एवं साम्राज्यवाद से पीड़ित मनुष्य के अन्दर सुख को बढ़ाना ही विश्वशांति का उद्देश्य है।

तदुपरान्त जिलासभा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा तथा श्री जे. दुबे ने यात्रा को चित्तौड़ के लिए झण्डी दिखाकर खाना किया।

डी.ए.वी. नाभा में मनाया गया दयानन्द निर्वाण दिवस

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा पंजाब के तत्त्वावधान में डी.ए.वी. सैंटनरी पब्लिक स्कूल नाभा के प्रांगण में दीपावली पर्व और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 134वाँ निर्वाण दिवस मनाया गया।

विद्यालय के प्रांगण में प्रातःकालीन सभा का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यालय के छात्रों व शिक्षकों ने दीपावली, ऋषि निर्वाण दिवस व बन्दी छोड़ दिवस के विषय में अपने विचार रखे। प्रधानाचार्या मैडम मीना मेहता ने छात्रों को ईक्को

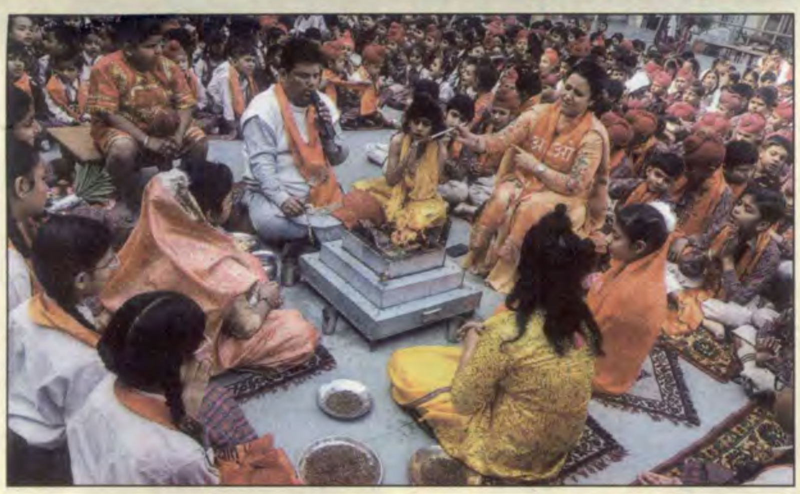

फरैंडली दीपावली के बारे में बताते हुए कहा कि इस दीपावली पर किसी प्रकार के चाइना द्वारा बने सामान का प्रयोग नहीं करेंगे और अपने पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए पटाखों का प्रयोग बिल्कुल नहीं करेंगे।

इसके बाद विद्यायल के प्रांगण में ऋषि निर्वाण दिवस के अवसर पर यज्ञ का आयोजन हुआ जिसमें छात्रों ने प्रधानाचार्या मैडम मीना मेहता व सभी शिक्षकों के साथ वेदों के पावन मन्त्रों का उच्चारण

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. ९

संपादक – **पूनम सूरी**

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 09 दिसम्बर 2018 से 15 दिसम्बर 2018

हे सोम! हृदय–कलश में प्रवेश करो

● **डॉ. रामनाथ वेदालंकार**

पवस्य सोम देववीतये वृषा, इन्द्रस्य हार्दि सोमधानमाविश।
पुरा नो बाधाद् दुरितातिं पारय, क्षेत्रविद्धि दिश आहा विपृच्छते।।

ऋग् ९.७०.९

ऋषिः **रेणुः वैश्वामित्रः**। देवता **पवमानः सोमः**। छन्दः **जगती**।

● **(सोम)** हे सोम परमात्मन्! **(तू)**, **(वृषा)** वर्षक **(होता हुआ)**, **(देववीतये)** दिव्य गुणों की प्राप्ति के लिए, **(पवस्य)** प्रवाहित हो, **(इन्द्रस्य)** आत्मा के, **(हार्दि)** हृदय–रूप, **(सोमधानं)** सोम–कलश में, **(आविश)** प्रविष्ट हो।, **(बाधात्)** बाधे जाने से, **(पुरा)** पहले, **(नः)** हमें, **(दुरिता अति)** पापचरणों से लंघाकर, **(पारय)** पार करदे। **(क्षेत्रवित्)** मार्ग का ज्ञाता, **(विपृच्छते)** विशेषरूप से पूछनेवाले के लिए, **(दिशः)** दिशाओं को, **(आह हि)** बताता ही है।

● हे रसागर सोम परमात्मन्! तुम 'वृषा' हो, रस की वर्षा करनेवाले हो। तुम दिव्य गुणों के रस के साथ मेरे अन्दर प्रवाहित होवो। तुम आत्मा के हृदय–रूप सोम–कलश में आकर प्रविष्ट होवो। मेरा आत्मा न जाने कब से सोम–पान के लिए उत्कंठित हो रहा है, उस प्यासे की तृषा को दूर करो। तुम कामवर्षी हो, मेरी कामना को पूर्ण करो। तुम आनन्दवर्षी हो, मुझपर आनन्द की वर्षा करो।

कभी–कभी मेरा आत्मा 'दुरितों' से घिर जाता है। पाप–भावनाएँ उसे आगे बढ़ने से रोकती हैं। पाप–कर्म उसे निगलने के लिए तैयार रहते हैं। आसपास का पापमय वातावरण उसे पाप–मार्ग पर चलने के लिए प्रलोभित करता है। ऐसे समय में हे मेरे सोम प्रभु! क्या तुम खड़े देखते ही रहोगे? क्या तुम मुझे 'दुरितों' से ग्रसा जाने दोगे? क्या तुम मुझे पाप–ताप के प्रहारों से छलनी हो जाने दोगे? क्या तुम मुझे दुराचार–रूप शत्रुओं से आक्रान्त हो जाने दोगे? नहीं, तुम मेरे उद्धारक होकर आओ। इससे पहले कि 'दुरित' मेरे आत्मा पर प्रभुत्व पायें, उसे पतनोन्मुख करें, तुम त्वरित गति से मेरे पास आ जाओ और मुझे उन दुरितों से लंघाकर पार कर दो। संसार का यह नियम है कि जो 'क्षेत्रवित्' है, मार्ग का ज्ञाता है, वह पूछनेवाले को दिशा बताता ही है। तुमसे बढ़कर 'क्षेत्रवित्' बढ़कर मार्गज्ञ अन्य कौन है! अतः हे मेरे सोम प्रभु! मैं तो तुम्हीं से दिशा पूछता हूँ। मैं दिग्भ्रान्त हो रहा हूँ, तुम कुतुबनुमा यन्त्र की सुई बनकर मुझे दिशा दर्शाओ। यदि तुमसे दिशा–ज्ञान न मिला, तो मेरा जीवन–पोत भव–सागर में डूबकर नष्ट–भ्रष्ट हो जायेगा। हे प्रभु! मुझ भूले को सही राह दिखाओ, मुझ भटके को गन्तव्य लक्ष्य पर पहुँचाओ।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

भगवान शंकर और दयानन्द

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

पिछले अंक में स्वामीजी ने बताया वेद ने ईश्वर को ज्योतियों की ज्योति कहा है। सूर्य की ज्योति को देखने से आपको उस महान् ज्योति का थोड़ा–सा संकेत मिल जायेगा। मन, बुद्धि, अहंकार, यह शरीर, सब जड़ है; जड़ को परमात्मा दिखाई नहीं देता, आत्मा को दिखाई देता है। ब्रह्म को पाने के लिए चार साधनों को आवश्यक माना है। 'षट् सम्पत्ति' उनमें तीसरा साधन है।

ब्रह्म–प्राप्ति के लिए चौथे साधन का नाम है 'मुमुक्षुत्व'–मुक्त होने की प्रबल इच्छा। इस इच्छा का अर्थ यह है कि संसार के लोगों से हटाकर अपने–आप को ईश्वर की ओर लगा दो। तीन बातें बहुत कठिनता से प्राप्त होती हैं– मनुष्यत्व, मुमुक्षुत्व और साधु की संगत। मनुष्य बनना, मनुष्य बनने के पश्चात् मुक्त होने की इच्छा और मुक्त होने की इच्छा के पश्चात् ऐसे महापुरुष की संगत जो इस इच्छा को पूर्ण करने का मार्ग दिखा सकता हो।

मनुष्य का जन्म मिलना बहुत कठिन है। यह शरीर मिल भी जाय तो जन्म और मरण के बन्धन से मुक्ति पाने की इच्छा का उत्पन्न होना और भी कठिन है, और यह इच्छा उत्पन्न भी हो जाय तो ऐसे साधु–सन्तों और महात्माओं का मिलना बहुत कठिन है, जो मुक्ति का मार्ग दिखा सकते हैं, उसपर चलने में सहायता दे सकते हैं।

अब आगे ...

पाँचवाँ दिन

मेरी प्यारी माताओ तथा सज्जनो!

कल मैंने कहा था कि आपको वेदान्त के विशाल वन में ले चलूँगा; उसमें भ्रमण कराऊँगा। परन्तु, ऐसा करने से पूर्व दो प्रश्नों के उत्तर देना चाहता हूँ जो आप में से कुछ सज्जनों ने मेरे पास भेजे हैं। पहले प्रश्न को पूछने वाले सज्जन कहते हैं कि कई दिन से हम आपकी कथा सुन रहे हैं, उसमें आनन्द भी लेते हैं, जी लगता है उसमें, परन्तु प्रतिदिन आप आत्मा की बात करते हैं, उसका क्या लाभ है? संसार को और विशेषकर भारत को आज आवश्यकता है भौतिक उन्नति की, उद्योग–धन्धों और कृषि क्षेत्र में आगे बढ़ने की। धन की, व्यापार की बात सुनाने के स्थान पर आप जो आत्मा की कहानी सुनाते फिरते हैं, उससे क्या होगा? पता नहीं कि आत्मा है भी या नहीं, यदि हो भी तो उसके मिल जाने से क्या लाभ होगा?

यह है प्रश्न– इसे देखकर मुझे तनिक भी आश्चर्य नहीं हुआ।

कथा को प्रारम्भ करते समय मैंने आपको महात्मा विदुर और धृतराष्ट्र की बात सुनाई थी। ठीक ऐसी ही बात है यह। विदुर ने कहा था, "समस्त संसार आज लोभ, भय और क्रोध से पागल हो गया है!" पाँच सहस्त्र वर्ष पूर्व यदि यह बात ठीक थी तो आज भी सत्य है। पाँच सहस्त्र वर्ष पूर्व यदि संसार दुःख से पागल था तो आज उससे अधिक दुःखी और अधिक पागल है। भौतिक उन्नति हुई है अवश्य, विज्ञान आगे बढ़ा है, औद्योगिक और कृषि–उत्पत्ति बढ़ी है, परन्तु सुख भी है किसी को? धनी–से–धनी और निर्धन से निर्धन व्यक्ति से जाकर पूछो, क्या वह सुखी है? यूरोप और अमेरिका तो उद्योग और कृषि में हमसे बहुत आगे हैं, विज्ञान में आगे हैं। सम्पत्ति और व्यापार में आगे हैं। उनसे जाकर पूछो क्या वे सुखी हैं? क्या उनके मन में आनन्द है, शान्ति है? यदि है तो फिर वे लड़े क्यों मरते हैं, अन्धाधुन्ध भागे क्यों जाते हैं? भय, क्रोध और लोभ से पागल क्यों हो गये हैं? नहीं, मेरी माताओ, मेरी बेटियो, मेरे भाईयो! सुखी न होने का कारण है केवल यह कि संसार आत्मा को भूल गया है। संसार में आनंद कहाँ है? इस प्रश्न की गम्भीरता में जब जाओगे तो पता लगेगा कि आत्मा को खोजे बिना, आत्मा को पाये बिना सच्चा आनन्द कभी नहीं मिलता।

अथर्ववेद काण्ड दस, सूक्त दो का तेतीसवाँ मन्त्र कहता है कि– "उसकी आँखें नहीं जातीं, उसके प्राण नहीं जाते जो आत्मा के रहने के स्थान को जानता है। ब्रह्मपुरी में रहने वाले आत्मा को जो जान लेता है, वह जरावस्था तक आँखोंवाला, प्राण, नाक और कानवाला, वाणीवाला, इन्द्रियों का स्वामी बना रहता है।

इस मन्त्र में प्राण का अर्थ है स्वास्थ्य। आँख, नाक, कान, वाणी और इन्द्रियों के रहने का अर्थ है कि ये सब ठीक और स्वस्थ दशा में रहती हैं। और ज़रा का अर्थ क्या है? क्या आप जानते हैं? साधारणतया ज़रा शब्द का अर्थ समझा

जाता है बुढ़ापा। परन्तु सुनो! ज़रा बुढ़ापे को नहीं कहते, बुढ़ापे के पश्चात् की दशा को कहते हैं। आयुर्वेद के अनुसार उत्पन्न होने से आठ वर्ष तक की आयु को बचपन कहते हैं। आठ से सोलह वर्ष की आयु को कुमारावस्था कहते हैं। सोलह से सत्तर की आयु को यौवन कहते हैं। सत्तर से सौ वर्ष की अवस्था को बुढ़ापा कहते हैं और सौ से एक सौ बीस वर्ष की आयु को ज़रा कहते हैं। आज यह बात कुछ व्यक्तियों को बहुत आश्चर्यजनक प्रतीत होगी, परन्तु महाभारत के युद्ध में जो लड़ रहे थे, उनमें कितने ही ऐसे थे, जिनकी आयु डेढ़ सौ, दो सौ वर्ष थी। कृष्ण और अर्जुन दोनों एक सौ बीस वर्ष के थे। भीष्म तो अर्जुन के पितामह थे। द्रोण की आयु चार सौ वर्ष बताई जाती है और वे इस प्रकार लड़ रहे थे जिस प्रकार युवक लड़ते हैं– यह है आत्मा को जानने का एक लाभ। आत्मा को जानने वाला सौ वर्ष के पश्चात् भी पूर्ण स्वस्थ, प्राण, कान और वाणीवाला बना रहता है। परन्तु यह तो केवल एक लाभ है– बहुत साधारण–सा लाभ, परन्तु तुम्हारी समस्त उन्नति से अधिक है जिसे तुम औद्योगिक, कृषिक, व्यापारिक और आर्थिक उन्नति कहते हो।

अब एक और लाभ सुनो! जब आत्मा जाग जाता है, जब आत्मा प्राप्त हो जाता है, तब एक ऐसी शक्ति मनुष्य में आती है जैसी शक्ति और किसी भी उपाय से नहीं मिलती।

बुद्ध घूम रहे थे। भारत में भ्रमण करते हुए मगध में पहुँचे तो एक नगरी के बाहर डेरा डालकर बैठ गये। लोग उनके दर्शनों को आये। बुद्ध ने पूछा, "क्या हाल है?" सबने कहा, "बहुत दुःखी हैं हम।" किसी ने कहा, "मेरा लड़का मारा गया।" किसी ने कहा, "पति मारा गया।" किसी ने कहा, "भाई मारा गया।" बुद्ध ने आश्चर्य से पूछा, "क्या हो गया है तुम सबको? क्या कोई युद्ध यहाँ पर हुआ? क्या राजा ने अत्याचार आरम्भ कर दिया?" लोगों ने कहा, "नहीं महाराज! राजा भी अच्छे हैं, युद्ध भी नहीं हुआ। परन्तु यहाँ एक डाकू रहता है अंगुलीमाल। वह प्रति एक नये व्यक्ति को मारकर उसकी अंगुली काट लेता है, जिस देवी की वह पूजा करता है, वह उसे एक हज़ार अंगुलियों की माला पहनाना चाहता है। उसे किसी ने कह दिया कि ऐसी माला पहनाने से बड़ी सिद्धि मिल जायेगी।" बुद्ध ने पूछा, "कहाँ रहता है वह?" लोगों ने बताया, "नगर के दूसरी ओर विशाल वन में।" बुद्ध बोले, मैं उसके पास जाऊँगा।" लोगों ने अशान्त होकर कहा, "उसके पास मत जाइये महाराज!" परन्तु बुद्ध मानने वाले नहीं थे, उठे और चल पड़े। लोगों ने कहा, "उसे राजा के सिपाही भी नहीं हरा सके, आप बिना हथियार के क्या करेंगे?" बुद्ध बोले, "मेरे पास ऐसा हथियार है जिसके सम्मुख और कोई हथियार नहीं चलता और वे नगर को पार करके जंगल में पहुँचे। सुनसान और वीरान वन था वह, अत्यन्त भयानक। कहीं कोई व्यक्ति नहीं, कोई पशु नहीं। बुद्ध चलते गये। पर्याप्त आगे जाकर एक बूढ़ी स्त्री मिली। बुद्ध ने पूछा, "माँ! क्या तुम जानती हो कि अंगुलीमाल डाकू इस वन में कहाँ रहता है?" बूढ़ी स्त्री ने कहा, "जानती हूँ पुत्र! परन्तु आगे मत जा, वापस चला जा यहाँ से। अंगुलीमाल मनुष्य नहीं, राक्षस है, वह तुम्हारा वध किये बिना मानेगा नहीं।" बुद्ध हँसते हुए बोले, "ऐसी क्या बात है माँ! क्यों मेरी हत्या करेगा?" बूढ़ी स्त्री ने कहा, "तू जानता नहीं है बेटा, एक सहस्त्र अंगुलियाँ वह एकत्र करना चाहता है। आज अन्तिम रात्रि है। आज उसे देवी की पूजा करनी है, उसे माला पहनानी है और माला में एक अंगुली अभी कम है। आज प्रातःकाल से ही किसी व्यक्ति को खोजता फिरता है। मैं उसकी माँ हूँ। मैने पूछा– यदि रात्रि तक कोई व्यक्ति न मिला तो क्या करेगा तू? वह बोला– यदि रात्रि तक कोई व्यक्ति न मिला तो मैं तुझी को मार डालूँगा, तेरी अंगुली को काटकर माला में पिरो दूँगा। मैं ऐसी डरी कि सायंकाल होने से पूर्व ही घर छोड़कर भाग उठी। अपनी माँ को नहीं छोड़ता वह तो तुझे कैसे छोड़ेगा? वापस चला जा यहाँ से। वह पहले पागल था, आज पूर्ण पागल हो गया है।" बुद्ध बोले, "मुझे मरने का डर नहीं है। मैं उसे मिलूँगा अवश्य। तुम बताओ वह रहता कहाँ है? बूढ़ी स्त्री ने कहा, "वृक्षों के काले झुरमुट के उस पार उसका मकान है, उसमें मिलेगा वह। परन्तु मैं अब भी कहती हूँ न जा।" बुद्ध हँसते हुए आगे बढ़े। झुरमुट के उस पार चले गये। सामने मकान दृष्टिगोचर हुआ। उसके समीप जाकर बोले, "कोई है?" अन्दर से आवाज़ आई। थोड़ी देर में अंगुली माल बाहर आया हाथ में तीक्ष्ण तलवार लिये। द्वार के बाहर आकर बोला, "कौन हो तुम?" बुद्ध बोले, "तुम्हीं क्या अंगुलीमाल हो?" डाकू ने चिल्लाकर कहा, हाँ, तुम्हारी मृत्यु यहाँ ले आई है, मैं गर्दन काटूँगा। बुद्ध हँसते हुए बोले, "तो मैं गर्दन कटवाने ही आया हूँ, ताकि तुम्हारी पूजा पूरी हो जाये। आगे बढ़ो, काटो यह गर्दन! और उन्होंने गर्दन झुका दी। अंगुलीमाल प्रसन्नता से चिल्लाकर आगे बढ़ा तलवार उठाकर, परन्तु यह क्या? तलवारवाला हाथ जहाँ का तहाँ रुक गया। पाँव सुन्न हो गये। उससे एक पग भी आगे नहीं बढ़ा गया। काँपते हुए उसने कहा– "यह क्या हो गया मुझको? कौन हो तुम?" बुद्ध बोले, "मैं हूँ गौतम।" डाकू ने तलवार फेंक दी, आश्चर्य से बोला, "आप ही गौतम बुद्ध हो? आप ही क्या मरने के लिए आये हो?" बुद्ध ने कहा, "हाँ, मैं गौतम हूँ, मैं मरने के लिए आया हूँ।" अंगुलीमाल काँपती हुई, आँसू भरी आवाज़ में बोला, "मुझे क्षमा कर दो गौतम, मैंने बहुत पाप किए हैं, मेरे पापों का कोई प्रायश्चित नहीं।" गौतम आगे बढ़े, उसके माथे को छूकर बोले, "घबराओ नहीं, मैंने तुम्हारे पाप नष्ट कर दिये, मैंने तुम्हारे मन को बदल दिया।" यही अंगुलीमाल बाद में भिक्षु बना। लंका में जाकर बौद्ध धर्म का प्रचार उसने ही किया।

यह है आत्मा की शक्ति, जिसके सामने और कोई शक्ति नहीं चलती।

मथुरा में बाल ब्रह्मचारी तेज से भरपूर स्वामी दयानन्द पाखण्ड के दुर्गों को गिराये देते थे। प्रतिदिन शास्त्रार्थ होते थे, प्रतिदिन उनके विरोधी हारते थे। दाँत पीसते थे कि वह साधु कल मथुरा से ही पढ़कर गया था, आज हमारी ही पोल खोले देता है, हमारी आजीविका छीने लेता है; शास्त्रार्थ में हमसे हारता नहीं, इसे हराने के लिए कोई और उपाय करना चाहिए। उपाय सोचा गया। एक वेश्या के पास गए वे लोग। सुन्दरी थी वह। उससे वे बोले, "हम तुझे बहुत–से आभूषण देंगे। अमुक उद्यान में दयानन्द रहता है, तू उसके पास जा। उसके पास जाकर कोलाहल मचा देना कि इसने मुझे छेड़ा है। हम निकट ही छिपे रहेंगे, बाहर निकल डण्डे से उसे अधमरा कर देंगे। उसे मथुरा से बाहर निकाल देंगे। बाहर निकल जाने पर तुम्हें और रुपया देंगे।" वेश्या ने यह बात मान ली। अपने–आपको खूब सजाकर कितने ही आभूषण धारण करके वहाँ गई, जहाँ ब्रह्मचर्य और आत्मा के तेज से चमकते हुए स्वामी दयानन्द बैठे थे, एक वृक्ष के नीचे आँखें मूँदकर, ध्यान में मग्न। वेश्या ने इनको दूर से देखा तो ऐसा प्रतीत हुआ जैसे आधे पाप धुल गए हैं। निकट गई तो शेष आधे भी धुल गए हैं, और निकट जाने पर अन्तःकरण भी पवित्र हो गया। एक चीख उसके मुख से निकल गई। बाल ब्रह्मचारी ने आँखें खोल दीं; बोले, "माँ, तुम कौन हो?" माँ का शब्द सुनते ही उसका ह्रदय भर आया, आँखें डबडबा आईं। अश्रुभरी आँखों से उनकी ओर देखकर अपने आभूषण उतारने लगी। महर्षि ने फिर कहा, "माँ! तुम कौन हो? अपने बेटे से क्या लेने आयी हो तुम?" स्त्री ने सिसकते हुए कहा, क्षमा माँगने आई हूँ महात्मा! इन आभूषणों ने मुझे अन्धा कर दिया था, इनकी मुझे आवश्यकता नहीं।" और रोते हुए उसने अपनी सारी कथा महर्षि को सुना दी। महर्षि ने गम्भीरता से कहा, "माँ! ईश्वर ने जो श्रेष्ठ बुद्धि इस समय दी है, वह सदा बनी रहे, यही मेरा आशीर्वाद है।"

इस स्त्री के पाप–भरे मन को बदला तो किस वस्तु ने? महर्षि की पवित्र आत्मा की शक्ति ने। आत्मा की शक्ति जिसके अन्दर जाग उठती है, उसके समक्ष ऐटम बमों और हाइड्रोजन बमों की शक्ति भी हार जाती है।

यह है आत्मा की खोज का लाभ! इसके बिना सच्ची शक्ति कभी नहीं मिलती, इसके बिना सच्चा सुख कभी नहीं मिलता।

दूसरा प्रश्न एक बेटी ने पूछा है कि आर्यसमाज के सिद्धान्त के अनुसार ईश्वर और आत्मा का सम्बन्ध पिता और पुत्र का है, स्वामी और सेवक का है, फिर मैं अपने एक भाषण में उसे पति–पत्नी के सम्बन्ध में उपमा दी तो क्यों? उसे प्रेमी और प्रीतम का सम्बन्ध दिया तो किसलिए? इसका अभी उत्तर देने की आवश्यकता नहीं। वास्तविक बात ईश्वर से परम अनुराग है। भिन्न–भिन्न स्थानों पर भिन्न–भिन्न दशाओं में यह भिन्न–भिन्न रूप धारण करता है। चाहे पिता और पुत्र का प्रेम कहें, मित्र और मित्र का कहें, प्रेमी और प्रीतम का– इस प्रेम को कभी हम प्रेम कहते हैं, कभी भक्ति कहते हैं, कभी श्रद्धा, कभी ममता, कभी अनुराग। इनमें से कोई भी बात आर्यसमाज के सिद्धान्त के विरुद्ध नहीं।

अब वास्तविक बात सुनिये! वेदान्त के उस विशाल वन में चलिये जिसकी बात मैंने कल कही थी। महर्षि दयानन्द ने वेद का झण्डा ऊँचा किया; जगद्गुरु शंकराचार्य ने वेदान्त का।

वेद का अर्थ है ऋग्, यजु, साम, अथर्व। परन्तु वेदान्त का अर्थ क्या है? इसको देखिये तो ज्ञात होगा कि वेद का अन्त अर्थात् उसका अन्तिम भाग ही वेदान्त है। जगद्गुरु शंकराचार्य ने जब अपने चारों ओर फैली घोर नास्तिकता को देखा तो वेद के अन्तिम भाग का आश्रय लेकर उसे दूर करने का प्रयत्न किया। यह अन्तिम भाग क्या है? क्या आप जानते हैं?

वेद का अन्तिम भाग है उस आध्यात्मिक ज्ञान का पहला भाग जिसे हम उपनिषद् कहते हैं। उपनिषदों का नाम तो आपने बहुत बार सुना है। ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, छान्दोग्य, वृहदारण्यक आदि; इनमें सबसे पहला उपनिषद् कौन–सा है? ईशोपनिषद्। और यह उपनिषद् वही है जो यजुर्वेद का अन्तिम अध्याय है, सबसे अन्त में आता है। वेद का अन्तिम भाग जिस ज्ञान का प्रारम्भ करता है, उसका नाम जगद्गुरु शंकराचार्य ने रखा वेदान्त। वेदान्त का यह भी अर्थ हो सकता है– अन्तिम भाग, और वेदान्त का अर्थ यह भी हो सकता है कि वेद अर्थात् ज्ञान की सीमा, ज्ञान का अन्त।

क्रमशः

पण्डित श्रीगंगाप्रसाद उपाध्याय

(व्यक्तित्व और कृतित्व)

● स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

गतांक से आगे

साहित्य के क्षेत्र में उपाध्यायजी का लेखक के रूप में अवतरण विचित्र परिस्थितियों में हुआ। इसका प्रारम्भ बिजनौर से होता है। अर्थात् सन् 1907 के अन्त से। स्कूल का वेतन कम था, दरिद्रता थी ही, 1907 में अकस्मात् अकाल पड़ा, रुपये का 14 सेर गेहूँ जो आता था वह अब 6 सेर से भी तेज हो गया। आपके ऊपर कर्जा चढ़ गया। इस दारिद्रय ने उन्हें लिखने को प्रेरित किया। उन्होंने एक नये ढंग की हिन्दी–भाषा का व्याकरण लिखा जो अंग्रेजी भाषा की शैली पर थी। सौभाग्य की बात थी कि प्रयाग का प्रकाशन **इण्डियन प्रेस** इसे छापने के लिए तैयार हो गया, और इस पुस्तक पर 200 रुपये का पारिश्रमिक इण्डियन प्रेस ने देना स्वीकार किया। उपाध्यायजी का ऋण इस पुस्तक के पारिश्रमिक से चुक गया। **जीवन–चक्र** में उपाध्यायजी ने इसका विवरण बड़ी भावुकता से दिया है। इसके बाद सन् 1908 में उपाध्याय जी ने इण्डियन प्रेस के लिये एक छोटी पुस्तक बाल–निबन्ध–माला लिखी। फिर 1910 के निकट छह भागों में हिन्दी शेक्सपियर नाम से शेक्सपियर के नाटकों की कहानियाँ अत्यन्त रोचक और भावमयी भाषा में लिखीं। मुन्शी धनपत राय जो बाद को प्रेमचन्द जी के नाम से अद्वितीय उपन्यासकार प्रसिद्ध हुये, वे ट्रेनिंग कॉलेज में आपके सहपाठी थे, इनके सम्बन्ध में उपाध्यायजी ने अपने **जीवन–चक्र** में यह वाक्य लिखे हैं– "मेरे ट्रेनिंग कॉलेज के सहपाठी थे मुन्शी धनपतराय, जो आगे चलकर मुन्शी प्रेमचन्द के नाम से प्रसिद्ध हुए। यह गणपत राय के कल्पित नाम से उर्दू के पत्रों में लेख लिया करते थे। अधिकतर ऐतिहासिक कहानियाँ। उन्होंने मुझे भी प्रेरणा की परन्तु उनके और मेरे मार्ग अलग ही रहे।"

उपाध्यायजी ने आर्यसमाज के साहित्य के अतिरिक्त हिन्दी भाषा में और उर्दू में भी कतिपय रचनायें की। सन् 1913–17 के बीच में इण्डियन प्रेस के लिये जीव–जन्तुओं पर 14 भागों में साहित्य लिखा था। सम्भवतया उसका पारिश्रमिक भी उनको मिला, सौ–सौ या दो–दो सौ रुपये प्रति भाग। पर ये पुस्तकें इण्डियन प्रेस ने छापी नहीं। अब तो शायद इनकी पाण्डुलिपि भी प्रेस ने नष्ट कर दी होगी। उपाध्यायजी का प्रिय विषय व्याकरण था। हिन्दी और उर्दू माध्यम से अंग्रेजी व्याकरण सीखने की दो पुस्तकें सन् 1914–15 के लगभग लिखी थीं और अपने खर्चे से छपवाई भी। इसका प्रकाशक कला एण्ड सन्स था, आपकी पत्नी श्रीमती कलादेवीजी के नाम पर। यहीं बाराबंकी में ही अंग्रेजी व्याकरण नवीन पद्धति पर तीन भागों में प्रकाशित की जिसका नाम **इण्डक्टिव ग्रामर** था। जब वे बाराबंकी में थे तो उन्होंने एक पुस्तक ब्रिटिश सरकार के शासन की विशेषताओं को व्यक्त करने वाली भी तैयार की थी। यह बात उस समय की है जब कि 1914 के प्रथम महायुद्ध आरम्भ हो गया था और समस्त भारतीय जनता अंग्रेजों के पक्ष में इस युद्ध का समर्थन कर रही थी। यह मूल पुस्तक उर्दू में लिखी गई थी और बाराबंकी के डिप्टी कमिश्नर को समर्पित थी। इसमें सम्राट् पंचम जार्ज और मेरी का चित्र भी था। पुस्तकें बिकी कम, कुछ बटीं थी। भारतीय राजनीति ने महायुद्ध के बाद एक नई दिशा में अपनाई और उपाध्यायजी ने अपनी पुस्तक को सर्वथा विनष्ट कर दिया और इस पुस्तक का उल्लेख उपाध्यायजी ने अपने **जीवन चक्र** में शायद किया भी नहीं। 1918 में आप प्रयाग आ गये और तब से उनकी लेखन शैली कई दिशाओं में प्रवृत्त हुई। लगभग यही दिन थे, काशी में बाबू शिवप्रसाद गुप्त ने अपने प्रसिद्ध प्रकाशन 'ज्ञान मण्डल' की संस्थापना की थी। इस ज्ञान मण्डल से आपका एक ग्रन्थ 'अंग्रेज जाति का इतिहास' प्रकाशित हुआ, जो अपने विषय का हिन्दी साहित्य का पहला ग्रन्थ था। वह युग था जब शिक्षा का माध्यम सभी स्कूलों में अंग्रेजी था। उपाध्यायजी को इस ग्रन्थ ने अच्छी ख्याति दी। किसी धनी–मानी सज्जन ने घोषित किया था कि विधवा–विवाह के पोषण में यदि कोई अच्छे ग्रन्थ की पाण्डुलिपि प्रस्तुत करेगा तो उसे पुरस्कार दिया जायेगा। इस भावना से प्रेरित होकर उपाध्यायजी ने बड़े परिश्रम से शास्त्रीय प्रमाणों को देते हुये एक पुस्तक 'विधवा–विवाह मीमांसा' लिखी। यह बात 1919 के लगभग की है। लगभग इसी वर्ष हिन्दी की प्रसिद्ध पत्रिका 'चाँद' का प्रकाशन श्रीराम रख सिंह सहगल ने धूम–धाम से प्रारम्भ किया। उपाध्यायजी और सहगलजी लगभग पड़ोस में ही रहते थे। सहगलजी को उपाध्याय की यह पुस्तक पसन्द आई और उन्होंने स्वयं पुस्तक में अनेक परिशिष्ट जोड़े और यह पुस्तक प्रकाशित हुई। चाँद पत्रिका के प्रकाशन का उद्देश्य समाज–सुधार था। यह सन् 1920 में प्रकाशित हुई।

प्रयाग से एक पत्रिका 'विज्ञान' नाम से सन् 1914 से बराबर प्रकाशित होती रही। इस पत्रिका का सम्बन्ध लगभग प्रारम्भ में ही मुझसे (स्वामी सत्यप्रकाश का) रहा। मेरे सुझाव पर उपाध्यायजी ने शंकर स्वामी के एक छोटे ग्रन्थ 'सर्व–दर्शन सिद्धान्त संग्रह' का अनुवाद किया। और यह मूल पुस्तक और अनुवाद धारावाहिक रूप से 'विज्ञान' पत्रिका में छपता रहा, जो बाद को पुस्तक रूप में कला प्रेस से प्रकाशित हुआ। इसी प्रकार उपाध्यायजी ने सन् 1932 में 'धम्म–पद' का अनुवाद भी हिन्दी में किया, जो कला प्रेस से प्रकाशित हुआ।

उत्तरोत्तर आपकी रुचि आर्य समाज के साहित्य के सृजन की ओर बढ़ती गई। 1923 के लगभग से ही आर्यसमाज चौक, प्रयाग की ओर से एक ट्रैक्ट माला प्रकाशित की जाने लगी। पंडित रामजीलाल शर्मा का एक छोटा सा हिन्दी प्रेस कर्नलगंज में था और इसी प्रेस में उपाध्यायजी के प्रारम्भिक कतिपय ट्रैक्ट बहुत सुन्दर मुद्रित किये। स्वामी दर्शनानन्दजी के बाद यह पहला प्रयास था जब कि ट्रैक्टों के प्रकाशन का एक सिलसिला प्रारम्भ हो गया। दो रुपये प्रति सैकड़ा में यह ट्रैक्ट बेचे जाते थे और आर्यजगत् में इन ट्रैक्टों के बाँटने में अच्छा उत्साह था। इन ट्रैक्टों की एक सूची उपाध्यायजी के **जीवन–चक्र** में परिशिष्ट में दी हुई है। उपाध्याय जी के कुछ प्रमुख ग्रन्थों का विवरण यह है– कोष्ठक में पृष्ठ संख्या है।

1. नवीन हिन्दी व्याकरण (150) 1907
2. बाल निबन्ध माला (125) 1908
3. हिन्दी शेक्सपियर, 6 भाग (1200) 1910
4. जीव जन्तु, 14 भाग (अप्रकाशित) (2100) 1913–17
5. अंग्रेज जाति का इतिहास (450) 1918
6. विधवा विवाह मीमांसा (350) 1920
7. आर्य समाज (200) 1923
8. सर्वदर्शन सिद्धान्त संग्रह (175)1925
9. आस्तिकवाद (414) 1926
10. अद्वैतवाद (452) 1927
11. वैदिक विवाह पद्धति (80) 1928
12. शंकर, रामानुज और दयानन्द (48) 1930
13. वैदिक उपनयन पद्धति (32) 1930
14. राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र और दयानन्द (122) 1931
15. धम्मपद (160) 1932
16. जीवात्मा (498) 1933
17. मनुस्मृति (भूमिका तथा भाष्य) (680) 1936
18. वैदिक मणिमाला (90) 1936
19. महिला व्यवहार चन्द्रिका (175) 1938
20. Reason & Religion (156) 1939
21. Swami Dayanand's Contribution to Hindu Solidarity (158) 1939.
22. I and My God (168) 1939
23. ईशोपनिषद् (128) 1940
24. Origin Mission & Scope of Arya Samaj (184) 1940
25. Worship (190) 1940
26. शतपथ ब्राह्मण (अनुवाद)(2500) 1967, 1969, 1970
27. Christianity in India (170) 1941
28. Superstition (148) 1941
29. Marriage and Married life (212) 1942
30. Agnihotra (32) 1942
31. भगवत् कथा (156) 1943
32. हम क्या खायें घास या मांस (180) 1946
33. Light of Truth (English Translation of Satyarth Prakash (860) 1946
34. शांकर भाष्यालोचन (360) 1947
35. Landmarks of Swami Dayanand's Teachings (88) 1947
36. आर्य–स्मृतिः (200) 1947
37. Vedic Culture (300) 1949
38. कम्युनिज्म (220) 1950
39. ऐतरेय ब्राह्मण (भाष्य) (580) 1950
40. Life After Death (136) 1950
41. Catechism of Hinduism (68) 1950
42. Hinduism (68) 1950
43. सनातन धर्म और आर्यसमाज (60) 1950
44. आर्योदय काव्यम् (पूर्वार्द्ध) (236) 1950
45. आर्योदय काव्यम् (उत्तरार्द्ध) (234) 1950
46. आर्यसमाज की नीति (32) 1951
47. मुक्ति से पुनरावृत्ति (50) 1951
48. सरल सन्ध्या विधि (84) 1951
49. धर्म–सुधा सार (144) 1954
50. जीवन–चक्र (500) 1954
51. Philosophy of Dayanand (550) 1955

क्रमशः

प्रस्तुति डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
अमेठी, उ.प्र.

गतांक से आगे

सत्यार्थ प्रकाश के 12वें समुल्लास में से चुने हुए अनमोल वचन

● भावेश मेरजा

56. अग्निहोत्रादि यज्ञों से वायु, वृष्टि, जल की शुद्धि द्वारा आरोग्यता का होना उससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि होती है। उसको न जानकर वेद, ईश्वर और वेदोक्त धर्म की निन्दा करना धूर्तों का काम है।

57. शरीर का विच्छेद होना मात्र मोक्ष है तो गदहे, कुत्ते आदि और तुम में क्या भेद रहा? किन्तु आकृति ही मात्र भिन्न रही।

58. बिना चेतन परमेश्वर के निर्माण किये जड़ पदार्थ स्वयम् आपस में स्वभाव से नियमपूर्वक मिलकर उत्पन्न नहीं हो सकते। इस वास्ते सृष्टि का कर्त्ता अवश्य होना चाहिये।

59. मृतकों का श्राद्ध, तर्पण करना कपोल–कल्पित है, क्योंकि वेदादि सत्य शास्त्रों के विरुद्ध होने से।

60. जो वस्तु है उसका अभाव कभी नहीं होता। विद्यमान जीव का अभाव नहीं हो सकता। देह भस्म हो जाता है, जीव नहीं। जीव तो दूसरे शरीर में जाता है।

61. देह से निकल कर जीव स्थानान्तर और शरीरान्तर को प्राप्त होता है और उसको पूर्व जन्म तथा कुटुम्बादि का ज्ञान कुछ भी नहीं रहता इसलिये पुनः कुटुम्ब में नहीं आ सकता।

62. ब्राह्मणों ने प्रेत–कर्म अपनी जीविकार्थ बना लिया है परन्तु वेदोक्त न होने से खण्डनीय है।

63. जो चारवाक आदि ने वेदादि सत्य शास्त्र देखे–सुने वा पढ़े होते तो वेदों की निन्दा कभी न करते।

64. जिन्होंने वेदों का विरोध किया और करते हैं और करेंगे वे अवश्य अविद्यारूपी अन्धकार में पड़ के सुख के बदले दारुण दुःख जितना पाएँ उतना ही न्यून है। इसलिये मनुष्यमात्र को वेदानुकूल चलना समुचित है।

65. 'विनाशकाले विपरीतबुद्धिः' – जब नष्ट–भ्रष्ट होने का समय आता है तब मनुष्य की उल्टी बुद्धि हो जाती है।

66. जो सब शून्य हो तो शून्य का जानने वाला शून्य नहीं हो सकता। और जो सब शून्य हो तो शून्य को शून्य नहीं जान सके, इसलिए शून्य का ज्ञाता और ज्ञेय दो पदार्थ सिद्ध होते हैं।

67. जो सब दुःख ही हो और सुख कुछ भी न हो तो सुख की अपेक्षा के बिना दुःख सिद्ध नहीं हो सकता। जैसे रात्रि की अपेक्षा से दिन और दिन की अपेक्षा से रात्रि होती है इसलिये सब दुःख मानना ठीक नहीं।

68. जो सब संसार दुःखरूप होता तो किसी जीव की प्रवृत्ति न होनी चाहिये। संसार में जीवों की प्रवृत्ति प्रत्यक्ष दीखती है इसलिये सब संसार दुःखरूप नहीं हो सकता किन्तु इसमें सुख–दुःख दोनों हैं।

69. जीव सुख जान कर प्रवृत्त और दुःख जान के निवृत्त होता है। संसार में धर्म–क्रिया, विद्या, सत्संगादि श्रेष्ठ व्यवहार सुखकारक हैं, इनको कोई भी विद्वान् दुःख का लिंग नहीं मान सकता, बिना बौद्धों के।

70. आकाश, काल, जीव और परमाणु – ये नये वा पुराने कभी नहीं हो सकते क्योंकि ये अनादि और कारणरूप से अविनाशी हैं। पुनः नया और पुरानापन कैसे घट सकता है?

71. सरल प्रकरण को छोड़कर कठिन जाल रचना केवल अज्ञानियों को फँसाने के लिये होता है।

72. जीव का अजीव में और अजीव का जीव में अभाव रहता ही है। जैसे जीव और जड़ के वर्त्तमान होने से साधर्म्य और चेतन तथा जड़ होने से वैधर्म्य अर्थात् जीव में चेतनत्व (अस्ति) है औत जड़त्व (नास्ति) नहीं है। इसी प्रकार जड़ में जड़त्व है और चेतनत्व नहीं है।

73. बिना संयोगकर्त्ता के यथायोग्य सर्वाऽवयव सम्पन्न, यथोचित कार्य करने में उपयुक्त शरीर बन ही नहीं सकता और जिन पदार्थों से शरीर बना है उनके जड़ होने से स्वयम् इस प्रकार की उत्तम रचना से युक्त शरीर रूप नहीं बन सकते, क्योंकि उनमें यथायोग्य बनने का ज्ञान ही नहीं।

74. जो रागादि दोषों से सहित होकर पश्चात् दोष रहित होता है वह ईश्वर कभी नहीं हो सकता क्योंकि जिस निमित्त से वह रागादि से मुक्त होता है वह मुक्ति उस निमित्त के छूटने से उसका कार्य मुक्ति भी अनित्य होगी।

75. जो अल्प और अल्पज्ञ है वह सर्वव्यापक और सर्वज्ञ कभी नहीं हो सकता क्योंकि जीव का स्वरूप एकदेशी और परिमित गुण, कर्म, स्वभाव वाला है। वह सब विद्याओं में सब प्रकार यथार्थ–वक्ता नहीं हो सकता।

76. जैसे कान से रूप और चक्षु से शब्द का ग्रहण नहीं हो सकता वैसे अनादि परमात्मा को देखने का साधन शुद्धान्तःकरण, विद्या और योगाभ्यास से पवित्रात्मा, परमात्मा को प्रत्यक्ष देखता है।

77. जैसे बिना पढ़े विद्या के प्रयोजनों की प्राप्ति नहीं होती वैसे ही योगाभ्यास और विज्ञान के बिना परमात्मा भी नहीं दीख पड़ता।

78. जैसे भूमि के रूपादि गुण ही को देख–जान के गुणों से अव्यवहित सम्बन्ध से पृथिवी प्रत्यक्ष होती है वैसे इस सृष्टि में परमात्मा के रचना–विशेष लिंग देख के परमात्मा प्रत्यक्ष होता है।

79. जो पापाचरणेच्छा समय में भय, शंका, लज्जा उत्पन्न होती है वह अन्तर्यामी परमात्मा की ओर से है। इससे भी परमात्मा प्रत्यक्ष होता है। अनुमान के होने में क्या सन्देह हो सकता है?

80. प्रत्यक्ष तथा अनुमान के होने से आगम प्रमाण भी नित्य, अनादि, सर्वज्ञ ईश्वर का बोधक होता है, इसलिए शब्द–प्रमाण भी ईश्वर में है।

81. जैसे मनुष्यों में कर्त्ता के बिना कोई भी कार्य नहीं होता वैसे ही इस महत्कार्य (सृष्टि) का कर्त्ता के बिना होना सर्वथा असम्भव है। जब ऐसा है तो ईश्वर के होने में मूढ़ को भी सन्देह नहीं हो सकता।

82. हम लोग परमेश्वर और परमेश्वर के गुण–कर्म–स्वभाव को अनादि मानते हैं। अनादि नित्य पदार्थों में अन्योऽन्याश्रय दोष नहीं आ सकता जैसे कार्य से कारण का ज्ञान और कारण से कार्य का बोध होता है। कार्य में कारण का स्वभाव और कारण में कार्य का स्वभाव नित्य है, वैसे परमेश्वर और परमेश्वर के अनन्त विद्यादि गुण नित्य होने से ईश्वर–प्रणीत वेद में अनवस्था दोष नहीं आता।

83. संयोग का आदि अवश्य होता है क्योंकि बिना वियोग के संयोग हो ही नहीं सकता।

84. चाहे कितना ही कोई सिद्ध हो तो भी शरीर आदि की रचना को पूर्णता से नहीं जान सकता।

85. जब सिद्ध जीव सुषुप्ति दशा में जाता है तब उसको कुछ भी भान नहीं रहता। जब जीव दुःख को प्राप्त होता है तब उसका ज्ञान भी न्यून हो जाता है।

86. यदि ईश्वर फल–प्रदाता न हो तो पाप के फल दुःख को जीव अपनी इच्छा से कभी नहीं भोगेगा। जैसे चोर आदि चोरी का फल दण्ड अपनी इच्छा से नहीं भोगते किन्तु राज्य–व्यवस्था से भोगते हैं, वैसे ही परमेश्वर के भुगाने से जीव पाप और पुण्य के फलों को भोगते हैं, अन्यथा कर्म–संकर हो जायेंगे, अन्य के कर्म अन्य को भोगने पड़ेंगे।

87. ईश्वर अक्रिय नहीं किन्तु सक्रिय है। जब चेतन है तो कर्त्ता क्यों नहीं? और जो कर्त्ता है तो वह क्रिया से पृथक् कभी नहीं हो सकता।

88. व्याप्य और व्यापक एक नहीं होते किन्तु व्याप्य एकदेशी और व्यापक सर्वदेशी होता है। जैसे आकाश सबमें व्यापक है और भूगोल और घटपटादि सब व्याप्य एकदेशी हैं। जैसे पृथिवी (और) आकाश एक नहीं वैसे ईश्वर और जगत् एक नहीं। जैसे सब घटपटादि में आकाश व्यापक है और घटपटादि आकाश नहीं, वैसे परमेश्वर चेतन सब में है और सब चेतन नहीं होता। जैसे आकाश सब में बराबर है, पृथिवी आदि के अवयव बराबर नहीं वैसे परमेश्वर के बराबर कोई नहीं।

89. आदि–सृष्टि में जीव के शरीरों और सांचों को बनाना ईश्वराधीन, पश्चात् उनसे पुत्रादि की उत्पत्ति करना जीव का कर्त्तव्य काम है।

90. परमात्मा किसी प्रपञ्च और दुःख में नहीं गिरता, न अपने आनन्द को छोड़ता है, क्योंकि प्रपञ्च और दुःख में गिरना जो एकदेशी हो उसका हो सकता है। सर्वदेशी का नहीं।

91. जो अनादि, चिदानन्द, ज्ञान–स्वरूप परमात्मा जगत् को न बनावे तो अन्य कौन बना सके? जगत् बनाने का जीव में सामर्थ्य नहीं और जड़ में स्वयं बनने का भी सामर्थ्य नहीं। इससे यह सिद्ध हुआ कि परमात्मा ही जगत् को बनाता और सदा आनन्द में रहता है। जैसे परमात्मा परमाणुओं से सृष्टि करता है वैसे माता–पिता रूप निमित्त–कारण से भी उत्पत्ति का प्रबन्ध नियम उसी ने किया है।

92. जो अनन्त–स्वरूप गुण–कर्म–स्वभावयुक्त परमात्मा है वह इस किञ्चित–मात्र जगत् को बनाता, धरता और प्रलय करता हुआ भी बन्ध में नहीं पड़ता क्योंकि बन्ध और मोक्ष सापेक्षता से है। जैसे मुक्ति की अपेक्षा से बन्ध और बन्ध की अपेक्षा से मुक्ति होती है। जो कभी बद्ध नहीं था वह

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

यज्ञ एवं जल मण्डल

● डॉ. रोचना भारती

जल का अत्यधिक महत्त्व होने के कारण इसे जीवन कहा गया है, किन्तु यह अमृत, औषध तथा प्राण आदि तभी कहा जा सकता है, जब यह शुद्ध हो। अशुद्ध जल मारक भी बन जाता है। जल तत्त्व सृष्टि का जीवन है। यह अनेक स्थितियों, परिवर्तनों एवं रूपों से विश्व का पालन–पोषण कर रहा है।

जल की अत्यधिक उपादेयता व गुणों के कारण ही वैदिक 'निघण्टुकोश' में जल के 101 नामों का उल्लेख है–

कर्णः, क्षोदः, नमः, अम्भः, सलिलम्, वाः, दसः, उदकम्, पयः,
सरः, भेषजम्, ओजः, सुखम्, आपः, हेमः, अम्बु, तोयम्, तेजः, स्वधाः, वारि, जलम्, जलाषम्, नदी आदि।

निघण्टु 1.12

अथर्ववेद के **'आपो देवता सूक्त'** में जल के अनेक नामों में एक नाम नदी भी कहा गया है–

यदद:संप्रयतीरहावनदता हते।
तस्मादा नद्यो नाम स्थ ता वो नामानि सिन्धवः।।

अथर्व.– 3.13.1

(जब मेघ आपस में टकराकर गरजकर बरसते हैं तब वह जल पृथ्वी पर एकत्र होकर नाद करता हुआ बहता है, अतः इसका नाम नदी है।)

अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजम्।

ऋग्वेद – 1.23.19

वेद में शुद्ध जलों को अमृत एवं औषध रूप कहा है।

इदमाप:प्र वहत यत्किञ्च दुरितं मयि।

ऋ. – 1.23.22[5]

(जलों में स्नान एवं उनका पान शरीर के मलों को दूर करता है।)

शुद्ध जल ऊर्जा वृद्धि प्रदान करते हैं, स्वर को उत्तम बनाते हैं, संवर्धन–शक्ति बढ़ाते हैं। वेद का मन्त्र है–

आपो अस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्व:पुनन्तु।
विश्वं हि रिप्रं प्रवहन्ति देवी रुदिदाभ्य:शुचिरा पूत एमि।।

ऋ. 10.17.10

(जल जीवन दायी है, मातृरूप है, अपनी तेजस्विनी घृतरूपा शक्ति से पवित्र करते हैं। समस्त रिप्रं = दोष प्रदूषण को दूर करते हैं।)

वेदों में जल को पवित्र करने वाला अग्रगन्ता तथा यज्ञ एवं यजमान को आगे ले जाने वाला कहा गया है–

देवीरापोऽ अग्रेगुवोऽ अग्रेपुवोऽ ग्रऽ इममद्य यज्ञम्।
नयताग्रे यज्ञपति सुधातुं यज्ञपतिं देवयुवम्।।

यजुर्वेद सं. 1.12

जिस प्रकार संतान का हित चाहने वाली माताएँ संतान को अमृत रूप दूध पिलाती हैं, वैसे ही शुद्ध जल भी अपना कल्याणकारी अमृत रस प्रदान करते हैं –

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः।
उषतीरिव मातरः।। ऋग्वेद – 10.9.2

(इन जलों का कल्याणकारी रस इस लोक में हमें प्राप्त हो और यह माता के समान हमारे लिये कल्याण करने वाले हों।)

जल जो अन्न वनस्पति आदि का स्वामी है और मनुष्यों को निवास देने वाला है, औषध रूप है, उसको हम चाहते हैं।

यः शम्बरं पर्वतेषु क्षियन्तं चत्वारिंश्यां शरद्यन्वविन्दत्।
ओजायमान यो अहिं जघान दानुं शयानं स जनास इन्द्रः।।

अथर्ववेद 20.34.11

इस मन्त्र में ईश्वर उपासना के कई कारण बताए गए हैं, उनमें से एक कारण यह भी है कि वह परमात्मा सूखे–अकाल के समय बादलों से पानी की वर्षा करके हमारे क्लेशों का अंत करता है।

इसी प्रकार से निम्न मन्त्र में भी कामना की गई है कि शुद्ध जल हमारा अभीष्ट सिद्ध करने वाला, सबका कल्याण करने वाला, तृष्णा शान्त करने, सभी रोग दूर करने के लिये बहता रहे तथा सुख रूप वर्षा निरन्तर होती रहे –

शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभिस्रवन्तु नः।।

यजुर्वेद सं. 36.12

यजुर्वेद में जलों को रोग निवारक मित्ररूप की कामना की गई है – (जल औषधि के रूप में उत्तम मित्र के समान सुखदायक हों।

सुमित्रया न आप ओषधयः सन्तु।

यजुर्वेद 20.29

दिव्य बादल गरज और बिजली के साथ हमारे लिये कल्याणप्रद वर्षा सब ओर से करे –

शन्न कनिक्रद् देवः पर्जन्यो अभिवर्षतु।।

यजुर्वेद 36.10

मैत्रायणी संहिता में कामना की गई है कि जो जल पृथ्वी को रस से सींचते हैं, वे हमारे लिये सुखकर हों –

या पृथिवी पयसोन्दन्ति शुलास्ता ना आपः शऽस्योना भवन्तु।।

मैत्रायणी संहिता 2.13.5

जल और अग्नि के संबन्धों का उल्लेख करते हुए कहा गया है –

अग्नि या गर्भ रधिरे।

मै. सं. 2.13.1

(अग्नि को जल अपने गर्भ में धारण किये हुए है।)

तथा कपिष्ठल संहिता में प्रेरणा की गई है कि – जल बलवान एवं पवित्र अग्नि का शरीर है, उसका उपयोग करें –

या वाजिग्नेग्रे प्रिया तनुरप्सु पावका तामावह।

कपिष्ठल संहिता – 6.3

निम्न मन्त्र वर्तमान युग में जल द्वारा विद्युत (बिजली) का निर्माण किया जाना वेदों में ऋषियों के चिन्तन को वैज्ञानिक सिद्ध करता है –

विद्युद्वाऽपां ज्योतिः।

शतपथ ब्राह्मण 7.5.2.49

यजुर्वेद वाङ्मय में जल में अमृत तथा भेषज गुण बताए गए हैं –

अप्स्वन्तरमृतस्यमेषजम्।

तैतरीय संहिता 1.7.7.1.2, मै.सं 1.11.1

शतपथ ब्राह्मण में जल को औषधियों का रस कहा है –

आपो ह वा औषधीनां रसः।

शत: ब्रा., 3.6.1.7

तथा जलों को सबका जनक कहा है –

आपो वै जनयोऽद्भ्योहीदं सर्व जायते।

शत. ब्रा. 6.8.2.3

तैतरीय आरण्यक में उल्लेख है कि जल समस्त लोकों का आधार है –

इसे वै लोका अप्सु प्रतिष्ठितः।

तै. आरण्यक – 1.22.8

तथा तै. ब्रा. में जल को प्राण भी कहा गया है –

प्राणा वा आपः।

तै. ब्रा. –3.2.5.2

प्रकृति में जल प्राप्ति के अनेक स्रोत हैं, जिनमें वर्षा का प्रमुख स्थान है। वेदों में कई मन्त्रों में उल्लेख है कि पृथ्वी पर जल का आगमन मेघों द्वारा होता है, जो जल को धारण करते हैं।

पर्जन्यो वृष्टि माऽइव।

तै. सं. – 1.4.20

समुद्र तल प्राप्ति का बहुत बड़ा स्रोत है। शत.ब्र. में समुद्र को नदीपति कहा गया है।

अपां वाऽएष पतिर्यन्नदीपतिः।

शत. ब्रा. – 5.3.4.10

तथा स्वच्छ जल से युक्त कुओं का भी उल्लेख है –

एता (कूप्या) वै तेजस्विनी रापः।

तै.ब्रा. – 1.4.10

(चेहरे की कान्ति और शरीर की कोमलता में भी जल सहायक होता है।) भोजन पचाने में भी तरल पदार्थ जल्दी पच जाते हैं। फलों के रसों में भी पानी का अंश होता है। जल हमारे लिये माता के समान है।

जलों के कई भेद हैं। जलों के प्रकार बताते हुए वेद में कहा है –

शं त आपो हैमवतीः शमु ते सन्तु स्याः
शं ते सनिष्यदा आपः शमु
ते सन्तु वर्ष्याः।
शं त आपो ध्वन्याः अहं ते सन्त्वनूप्या;
शं ते खनित्रिमा आपः
शं याः कुम्भेभिराभृतोः।।

अथर्व. 19.211.2

हैमवती जल – हिमालय पर होने वाले बर्फ रूप जल अथवा चट्टानों के मध्य कुण्डों में जो जल होता है वह हैमवती जल कहलाता है। हिमालय के झरनों का जल, खनिज द्रव्य और औषधियों के रस से युक्त होता है।

उत्स्या आपः – स्रोतों के जल – स्रोतों का जल भूमि एवं पर्वतों को चीरकर झरनों के रूप में निकलता है। इन जलों में भी खनिज पदार्थ होते हैं, किन्हीं–किन्हीं झरनों के सरोवर रूप जलों में गंधक औषध का भरपूर मिश्रण होता है। गंधक से भरपूर सुपरिचित झरना देहरादून मसूरी के पहाड़ों में है, जिसे **'सहस्र–धारा'** नाम से सभी जानते हैं।

सनिष्यदा आपः – सदा बहने वाला जल, नदी आदि जलाशयों में सदा बहने वाला जल अधिक दूषित नहीं हो पाता। इन जलों से ही समस्त खेती समृद्ध फलीभूत होती है।

वर्ष्या आपः – वर्षा का जल – वृष्टि से प्राप्त होनेवाला जल शुद्ध तथा औषधि, वनस्पति जीव–जन्तुओं को जीवन देने वाला होता है। इन जलों का प्राण कहा जाता है। मन्त्र में –

यदा प्राणो अभ्यवर्षीद् वर्षेण पृथिवीं महीम्।
पशवस्तत् प्र मोदन्ते महो वै नो भविष्यति।।

अथर्व. 11.4.5

मन्त्र का अर्थ है – (जब वर्षा के द्वारा पृथ्वी पर प्राण रूप जल बरसता है, तब सभी प्राणी प्रसन्न होते हैं और हमारा कल्याण होगा, महात्म्य बढ़ेगा ऐसा अनुभव करते हैं।)

धन्वन्याः आपः – अंतरिक्ष का जल – अंतरिक्ष का जल वाष्प रूप में होता है, इसे मरुत गण संग्रह करते हैं। इन जलों में अभ्रक लोहा तत्त्व विद्यमान होता है, यह जल शरीर पिण्डों के लिये शक्ति के अनुसार लाभ पहुँचाते हैं।

मरुस्थल भूमि के जल भी जो कहीं–कहीं होने वाले हैं वे भी धन्वन्या आपः कहे जाते हैं। मरुस्थलों के रेतीले भाग में भी लोहा, अभ्रक आदि होता है।

अनूप्याः आपः – गीले प्रदेशों के जल – गीले प्रदेश तराई क्षेत्रों को कहते हैं। इन प्रदेशों को अनूप भी कहते हैं, यहाँ होने वाला जल अनूप संज्ञक होता है। ये जल कभी–कभी कृमि आदि से दूषित भी हो जाते हैं।

खनित्रिमा आपः – खोदकर प्राप्त होनेवाले जल – कुआँ, ट्यूबवेल आदि खोदकर जो जल प्राप्त किया जाता है उस जल को खनित्रिमा जल कहते हैं। खोदे हुए जल की विशेषता होती है कि जो जिस भूमि से निकलता है वह उसी गुण का होता है, इसीलिये कहीं का जल मीठा और कहीं का खारा होता है।

कुम्भेभिः आभृता:आपः – घडे,

शेष पृष्ठ 07 पर

इन्द्र मातरो देवजामयः

● शिवनारायण उपाध्याय

इन्द्र की माता देवजामय ऋग्वेद की ऋषिका है। इनका कार्य ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त संख्या 153 पर है। इस सूक्त में 5 ऋचाएँ हैं। इन पाँच ऋचाओं में पहली दो ऋचाओं में राजा के गुणों का कथन है और अगली 3 ऋचाओं में वायु और सूर्य शक्ति का वर्णन है।

ईड्खयन्तीरपस्युव इन्द्रं जातमुपासते।
भेजानासः सुवीर्वम्।।

ऋ. 10.153.1

पदार्थ – (**उपस्युवः**) कर्मशील (**सुवीर्यम्**) उत्तम शूरता को (**भोजानासः**) रक्षित करती हुई प्रजाएँ (**जातम्**) प्रसिद्ध (**इन्द्रम्**) राजा को (**ईड्खयन्तीः**) प्राप्त होती हुई (**उपासते**) उसका आश्रय ग्रहण करती है।

भावार्थः– कर्मठ और उत्तम शूरवीर प्रजाएँ प्रसिद्ध राजा को प्राप्त करती हुई उसके आश्रय को ग्रहण करती हैं।

त्वमिद्रं बलादाधि सहसोजात ओजसः।
त्वं वृषन्वृषेदसि।।

ऋ.10.153.2

पदार्थ – हे (**इन्द्र**) राजन्। (**त्वम्**) तू (**बलात्**) बल से (**सहस**) सामर्थ्य से और (**ओजसः**) तेज से, पराक्रम से (**जातः**) उत्पन्न हुआ (**असि**) है। (**वृषन्**) हे बलधारी। (**त्वम्**) तू (**वृषा इत्**) सबसे अधिक बलवान् और सुखदाता (**असि**) है।

त्वमिन्द्रासि वृत्रहा व्यन्तरिक्षमतिरः।
उद्द्यामस्तभ्ना ओजसा।।

ऋ 10.153.3

पदार्थ – (**त्वम्**) तू (**इन्द्र**) इन्द्र (**वायु अथवा सूर्य**) (**वृत्रहा**) मेघ को मारने वाला (**असि**) है। (**अन्तरिक्षम्**) अन्तरिक्ष लोक को (**नि अतिरः**) अपवारक मेघ को नष्ट कर बढ़ाता है। (**ओजसा**) बल से (**द्याम्**) द्युलोक को (**उत्, अस्तभ्नाः**) ऊपर ठहराता अथवा स्थापित करता है।

भावार्थ – यह वायु तथा सूर्य मेघ को नष्ट करने वाला है। मेघ रूप आवरण को हटाकर अन्तरिक्ष को बढ़ाता है। अपने बल से द्युलोक को ऊपर धारण करता है।

त्वमिन्द्र सजोषसमर्क विभर्षि बाह्वोः।
वज्रं शिशान ओजसा।।

ऋ.10.153.4

पदार्थ – (**त्वम, इन्द्र**) यह इन्द्र (**वायु अथवा सूर्य**) (**सजोषम्**) साथ रहने वाले (**अर्कम्**) अर्चनीय (**वज्रम्**) वज्र को (**ओजसा**) बल से (**शिशानः**) तीक्ष्ण करता हुआ (**बाह्वोः**) मित्र और वरूण रूपी बाहुओं में (**विभर्षि**) धारण करता है।

भावार्थ – यह वायु अथवा सूर्य साथ रहने वाले अर्चनीय वज्र को बल से तीक्ष्ण करता हुआ मित्र और वरूण जो इसके हाथ हैं उनमें धारण करता है।

त्वमिन्द्राभिभूरसि विश्वा जातान्योजसा।
स विश्वा भुव आभवः।।

ऋ. 10.153.4

पदार्थ – (**त्वम् इन्द्र**) यह इन्द्र (**वायु अथवा सूर्य**) (**विश्वा**) सब (**जातानि**) उत्पन्न हुए पदार्थों का (**ओजसा**) अपने बल से (**अभिभूः**) अविभाजिता (**असि**) है। (**सः**) वह यह (**विश्वा**) समस्त (**भुवः**) स्थानों को (**आ अभवः**) प्राप्त होता है। इति।

73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी,
कोटा (राज.)

☞ पृष्ठ 06 का शेष

यज्ञ एवं जल मण्डल

कलश आदि में रखा जल – जल रखने के पात्र, घट आदि मिट्टी, सोना, चाँदी, पीतल, तांबा, लोहा आदि धातुओं के बनते हैं। इन धातुओं से बने पात्रों में रखा भी तत्–तत् गुणों से युक्त होता है।

यजुर्वेद में उल्लेख है कि सुगंधादि पदार्थों से यज्ञ करके मधुर, पवित्र एवं गुणयुक्त जलों को उत्पन्न करें, जिससे उत्तम गुणों से युक्त औषधियाँ प्राप्त हों तथा प्रजा की यक्ष्मा आदि रोगों से रक्षा हो।

आपो देवी रूपसृज मधुमतीरयक्ष्माय प्रजाभ्यः।
तासामास्थानादुज्जिहतामोषधयः सुपिप्पला।।

यजु. स – 11.38

जल को यज्ञ द्वारा सुसंस्कृत एवं शुद्ध करके और अधिक हितकारी बनाया जा सकता है तथा –

निकामे निकामे नः पर्जन्योवर्षतु।

यजु. – 22.22

प्रार्थना द्वारा इच्छा और आवश्यकतानुसार वर्षा की कामना की जाती है, वह भी यज्ञ द्वारा पूर्ण होने का उल्लेख है –

वृष्टिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।

यजु. सं – 18.9

सूर्य की किरणें एवं औषधियाँ भी जल को शुद्ध करती हैं। यजुर्वेद में सूर्य रश्मियों एवं कुशा घास को जल का शोधक कहा है–

सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण
पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।

यजु.स. 1.12

यज्ञ द्वारा जल शोधन– इन विभिन्न प्रकार के जलों से जड़ चेतन पुष्ट व समृद्ध होते हैं। इनके दूषित होने पर इनके शोधन का कार्य यज्ञ द्वारा होता है। वे जल चाहे अंतरिक्ष के हों, वृष्टि के हों नदियों आदि के हों, जल शोधन की यज्ञीय शक्ति को यजुर्वेद में वर्णित किया है –

अग्निश्च मऽआपश्च मे – यज्ञेन कल्पन्ताम्।

यजु.– 18.14

(अर्थात् अग्नि एवं जलों को शुद्ध आरोग्यप्रद यज्ञ के द्वारा प्राप्त करें।)

यो होमेन सुगंधयुक्त द्रव्य परमाणुयुक्त
उपरिगतो वायुर्भवति
स वृष्टि जलम् शुद्धं कृत्वा,
वृष्ट्यआधिक्यमपि करोति।

(अर्थात् जो यज्ञ के द्वारा सुगंध तथा द्रव्य परमाणु युक्त ऊपर जाता हुआ वायु होता है, वह वृष्टि जल को शुद्ध करता है और अधिक वृष्टि भी कराता है।)

प्राचीन ऋषि–मुनि जल की पवित्रता एवं शुद्धता को बनाए रखने के लिये विशेष सचेष्ट थे। **तैत्तरीय आरण्यक** में निर्देश है कि –

नाप्सु मूत्रदीषत् कुर्यात्र दृष्टवेत्।

तै. आ. 1.26

(अर्थात् जल में न कभी मलमूत्रादि का त्याग करना चाहिये और न थूकना चाहिये।)

आजकल समस्त नदियों आदि में गाँवों–शहरों का मल–जल, बढ़ते हुए छोटे–बड़े उद्योग–धन्धों से निकलने वाले अपशिष्ट, कचरा आदि बहा दिया जाता है। इन दूषित जल, कुओं, बावड़ियों, नदियों, समुद्रों आदि का जलीय अंश सब स्थानों से भाप बनकर उड़ जाता है और अंतरिक्ष में इकट्ठा होता जाता है। यही मलार्क रूपी जल वर्षा द्वारा प्राणियों को मिलता है। इस दूषित जल से कई तरह की बीमारियाँ फैलती जा रही हैं, साथ ही साथ इस दूषित जल से उत्पन्न होने वाले अन्न, फल–सब्जियाँ, वनस्पतियाँ भी हानिकारक हो रहे हैं। बढ़ती हुई जनसंख्या के प्रदूषण को रोकना असम्भव होता जा रहा है।

वैदिक वाङ्मय में वृष्टि को जल शुद्धि का साधन मानते हैं, क्योंकि वर्षा से जल में गति आती है और गति जलशुद्धि में सिद्ध हेतु है। यज्ञ एकमात्र ऐसा साधन है, जो मूल केन्द्र वर्षा को शुद्ध करके सभी जल केन्द्रों का शुद्धिकारक सिद्ध होता है। जलीय वनस्पति से भी जल शुद्धि होती है।

जल शुद्धि की रासायनिक विधियाँ हानिकारक सिद्ध हो जाती हैं, क्योंकि इसका का सतत प्रयोग पाचन तन्त्र और संवदेनशील अंगों पर दुष्प्रभाव देता हुआ यमदूत रूपी कैंसर को निमन्त्रण देता है। परंपरागत विधियों के साथ–साथ ताम्बे, चांदी और सोना धातु का प्रयोग भी जल की जीवाणु मुक्तता में उपयोगी है।

जल के अनेक नामों में एक नाम **'अमृत'** – अर्थात् मृत्यु से बचाने वाला है, वहीं उसका नाम 'विष' भी है। तात्पर्य यह है कि शुद्ध जल जीवन का साधन बनता है और अशुद्ध जल मृत्यु का। अशुद्ध पेय जल डायरिया, गैस्ट्रोएंटाटिस, कालरा, पीलिया और डिसेन्ट्री आदि का कारण भी है।

इस गंभीर समस्या के समाधान के लिये वेदों में यज्ञ का अनुष्ठान करते रहने का ही उपाय बताता है। यज्ञाग्नि में पौष्टिक, सुगन्धित, रोगनाशक एवं स्वादिष्ट पदार्थों की आहुतियाँ दी जाने पर उनसे उत्पन्न वाष्प का सम्पर्क अंतरिक्ष मलार्क से होता है, जिससे मल के परमाणुओं का विनाश होकर पौष्टिक, रोगनाशक, स्वादिष्ट तत्वों की जल में प्रधानता हो सकती है, इसके लिये विशाल स्तर पर बृहद् यज्ञ होते रहने आवश्यक हैं। प्राचीन ऋषि–मुनियों ने प्रत्येक गृहस्थ के लिये प्रतिदिन यज्ञ करने का विधान किया है।

मनीषियों ने गंगा, यमुना, गोदावरी आदि नदियों की महिमा का गुणगान करते हुए उनके जल को शुद्ध–पवित्र करने के लिये जन–मानस को प्रेरित किया था। इन पवित्र नदियों, जलाशयों के पास से जब भी निकलें तब एक ताम्बे का सिक्का श्रद्धा से उसमें डालने का नियम बनाया था क्योंकि ताम्बा जल को शुद्ध करता है, ऐसा स्मृतियों में उल्लेख है। आज भी ताम्रपात्र में जल रखने की विधि प्रचलित है। प्राचीन मनीषियों के चिन्तन का प्रकाश 'यज्ञ' ही जल प्रदूषण से विश्व को बचा सकता है।

यज्ञ से होगा सुनहरा कल से साभार

महर्षि दयानन्द का राजनीतिक दृष्टिकोण

● डॉ. आर्येन्दु द्विवेदी

स्वामी दयानन्द राजतंत्र और प्रजातंत्रीय पद्धति को मानने वाले राजनीतिक तत्त्व चिन्तक थे। राजनीतिक अर्थ में स्वामी दयानन्द राजनीतिक चिन्तक नहीं थे किंतु उनके विचार में राजनीतिक चिंतन उद्घटित होता है। स्वयं राजनीतिक की परिधि से बाहर रहकर भी राजनीति क्षेत्र में प्रभूत अवदान किया है। धार्मिक होकर भी उन्होंने मनुष्य के भौतिक पक्ष की उपेक्षा नहीं की। मानव जीवन का कोई भी पक्ष उनके लिए परकीय नहीं था। स्वामी जी के जीवन का उद्देश्य सम्पूर्ण मानव जीवन को अध्यात्म दर्शन के निर्देश में लाना था।

स्वामी दयानन्द ने परोक्षरूप से स्वतंत्र राजनीतिक जीवन की नींव डाली थी। उन्होंने चरित्र निर्माण, नैतिक शिक्षा, शुद्धता एवं ब्रह्मचर्य पर बल दिया। उनकी राजनीतिक विचारधारा में इस बात पर सबसे अधिक बल दिया गया है कि राजा से लेकर नीचे तक सभी लोग सदाचारी और सच्चरित्रवान् हों। महर्षि की मान्यता है कि जब तक मनुष्य धार्मिक, सदाचारी रहते हैं तब तक राज्य बढ़ता है और उन्नति करता है, जब दुष्टाचारी हो जाते हैं तब नष्ट भ्रष्ट हो जाता है।

महर्षि दयानन्द ने भारतीय राष्ट्रवाद को धार्मिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक दृष्टि से नया मोड़ दिया। उनकी राष्ट्रीय विचारधारा वैदिक धर्म पर आधारित थी। महर्षि ने लेख व कथन में सर्वत्र स्वराज्य व साम्राज्य की चर्चा की है। वेदभाष्य, सत्यार्थ प्रकाश, आयाभिविनय तथा गोकरुणानीधि में सैंकड़ों उद्धरण दिए हैं। स्वामी दयानन्द भारत की राजनीतिक पराधीनता से अत्यंत दु:खी थे। उनकी कामना थी कि भारत विदेशियों की दासता से मुक्त होकर स्वराज्य का गौरव प्राप्त करे। ऋषि की इस भावना को लक्ष्य में रखकर आर्य समाज ने अपने शैशवकाल में ही भारतीय राष्ट्रीय संग्राम में अपना योगदान दिया। स्वामी जी ने ''वेदों की ओर वापस जाओ'' का नारा भारतीयों को दिया। वेदों की शिक्षाओं के पालन से स्वराज्य सुलभ हो जाएगा ऐसा स्वामी जी का विचार था।

स्वामी दयानन्द ने स्वदेशी वस्तुओं, स्वदेशी राष्ट्रभाषा हिन्दी, स्वदेशी सांस्कृतिक भाषा संस्कृत, स्वदेशी उद्योग, स्वदेशी संस्कृति, स्वदेशी शिक्षा, अनिवार्य शिक्षा, स्वदेशी न्याय व्यवस्था तथा ईसाईयत के स्थान पर वैदिक धर्म के पक्ष में और भारत की एकता के प्रमुख शत्रु जाति प्रथा के विरुद्ध तुमुस आन्दोलन आरंभ किया। वे स्वदेशी वस्त्रों के प्रबल समर्थक थे। लाहौर आर्यसमाज के सदस्यों को स्वदेशी वस्तुओं को पहनने का भी व्रत दिलवाया था। स्वामी जी ने स्वदेश, स्वधर्म, स्वजाति, स्वसंस्कृति तथा स्वभाषा का प्रबल समर्थन करके देशवासियों में राष्ट्रीय भावना का संचार किया।

स्वामी दयानन्द अपने देश को स्वतंत्र देखना चाहते थे अतः इसी कारण से उन्होंने स्वराज्य के सिद्धातों का प्रतिपादन किया। वेदों में स्वराज्य की धारणा से अभिप्राय शांति, समृद्धि, स्वतंत्रता, प्रचुरता एवं साम्राज्य से है। स्वराज्य पारस्परिक सहयोग, राष्ट्रीय एकता की भावना से प्राप्त किये जाते हैं। सम्पूर्ण समाज को संगठित करके एवं सम्पूर्ण शक्तियों का संचय करके स्वराज्य की प्राप्ति की जा सकती है। स्वामी दयानन्द ने स्वराज्य के सिद्धान्त का प्रतिपादन करके विदेशी दासता से मुक्ति प्राप्त करने हेतु भारतीय जनमानस में स्वराज्य की भावना जागृत की। आर्यसमाज की राजनीतिक शिक्षाओं का मुख्य तत्त्व 'वैदिक स्वराज्य' था। आर्यसमाज ने सर्वप्रथम देशवासियों में राष्ट्रधर्म के लिए स्वाभिमान उत्पन्न किया तथा देशवासियों को राष्ट्रीय पराधीनता के कारणों से परिचित कराकर उन्हें दूर करने का प्रयास किया। स्वामी दयानन्द ने आधुनिक भारत में सर्वप्रथम स्वराज्य की आवाज उठाई थी। स्वामी दयानन्द ने भारतीय पराधीनता का प्रमुख कारण धार्मिक कुरीतियाँ माना है।

स्वामी दयानन्द ने देशभक्ति, राष्ट्रीयता एवं स्वराज्य की भावना अपने प्रवचनों व ग्रन्थों से उत्पन्न की थी। जिसके कारण 1928 में गाँधी जी द्वारा किए गए स्वराज्य आन्दोलन में बड़ी संख्या में आर्यसमाजी लोगों ने भाग लिया। स्वामी जी ने स्वराज्य प्राप्ति का उपदेश दिया और कहा कि सभी की उन्नति नकल करने में नहीं अपितु स्वयं में निहित है। आर्यसमाजी लाला लाजपतराय एवं स्वामी श्रद्धानन्द ने स्वराज्य में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। लाहौर में 2 हजार से अधिक आर्यसमाजी कार्यकर्ताओं ने स्वशासन की माँग हेतु स्वयं को पंजीकृत कराया। लाहौर में वन्देमातरम् ऐजेन्सी ने देशभक्ति और स्वराज्य से सम्बन्धित आठ पुस्तकें–शिवाजी विचार, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी भाषण, राष्ट्रीय शिक्षा, गोपालकृष्ण गोखले भाषण, सरकारी सेवा, कीहार्डी कृत भारत की कहानी, रास बिहारी घोष के विचार, राष्ट्र जिन्दा कैसे रहे, प्रकाशित किया। पं. लेखराम, गुरुदत्त विद्यार्थी ने स्वराज्य को मानव की पहली आवश्यकता बतलाया। स्वामी दयानन्द ने लार्ड बुक्स से कहा था कि–''मैं प्रतिदिन परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि विदेशी राज्य भारत से उठ जाए और भारत का शासन भारतवासियों के हाथ में हो।'' इससे वायसराय महोदय चकित हुए और दयानन्द पर कड़ी नज़र हेतु इण्डिया ऑफिस को लिखा। महर्षि दयानन्द के कार्यों व विचारों के फलस्वरूप भारतवासियों में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संगठित होने का साहस प्रादुर्भूत हुआ। उनके राष्ट्रवादी विचारों की प्रेरणा से आर्यसमाजी कार्यकर्ताओं ने सर्वस्व बलिदान करके भाग लिया।

स्वामी दयानन्द ने राज्य तथा राजा के कर्तव्य पर विस्तार से प्रकाश डाला है। स्वामी जी के अनुसार राजा उसी को कहते हैं जो शुभ गुण, कर्म, स्वभाव से प्रकाशमान, पक्षपात रहित, न्याय धर्म का सभी प्रजाओं से पितृवत् व्यवहार करें और उनको पुत्रवत् मानकर उन्नति और सुख बढ़ाने में सदा यत्न करें। इनके अनुसार मनुष्य समुदाय में परम ऐश्वर्यकर्ता शत्रुओं को जीत सके, राजाओं में सर्वोपरि विराजमान प्रकाशमान हो, सभापति होने के अत्यंत योग्य, प्रशंसनीय गुण, कर्म स्वभावयुक्त, सत्करणीय और सबका माननीय हो। उसी को सभापति (राजा) बनना चाहिए। राजा को अन्य सभासदों से विचार करके गम्भीर समस्याओं का निराकरण करना चाहिए।

स्वामी दयानन्द के अनुसार राजा तथा राज्यसभा का सभासद वही हो सकता है जो चारों वेदों, कर्मोपासना, सनातन दण्डनीति न्यायविद्या, आत्मविद्या और ब्रह्मविद्या में निपुण हो। राजा को धार्मिक जितेन्द्रिय तथा योगाभ्यासी होना आवश्यक है। सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में राजधर्म की विस्तृत व्याख्या की है। चारों वर्णों को वेदों के अनुसार व्यवस्थित करना और प्रजा को विद्या, स्वतंत्र, धर्म, सुशिक्षा और धनादि से अंलकृत करना राजा और राज्य का धर्म है। परम् विद्वान् ब्राह्मण की तरह विद्वान और सुशिक्षित होकर न्याय से राज्य की रक्षा करना राजा का धर्म है। राजा ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो सत्यवादी, बुद्धिमान, धर्मपरायण, त्रिवर्ग रहस्य ज्ञाता, वेदशास्त्रों का जानकर और आचरणकर्ता हो।

महर्षि दयानन्द ने राज्य संचालन के लिए तीन सभाओं जिनमें विद्यार्थी सभा, धर्मार्य सभा, राजार्यसभा का संगठन करके उनकी राय से राज्य का प्रशासन चलाना चाहिए। स्वामी जी ने ऋग्वेद के एक छंद के आधार पर इन सभाओं को मान्यता दी है। स्वामी जी के अनुसार विद्यार्य सभा राज्य में सब प्रकार की शिक्षा का प्रसाद, संचालन के कार्यों का नियंत्रण करेगी। धर्मार्य सभा राज्य के लोगों के चरित्र निर्माण की व्यवस्था करेगी और न्याय व्यवस्था पर नियंत्रण करेगी। राजार्य सभा राज्य के शेष सभी व्यापार, कृषि, उद्योग, धन्धे कर व्यवस्था आदि आर्थिक कार्यों तथा राज्य के विदेशी विभाग आदि कार्यों का संचालन और नियंत्रण करेगी। राजार्य सभा प्रजाजनों पर कर द्वारा राज्य के विभिन्न कार्यों के लिए धन की व्यवस्था करेगी और विद्यार्य सभा तथा धर्मार्य सभा भी उनके कार्यों के लिए धन देगी। ये दोनों सभाएँ राजार्य सभा के निरीक्षण में कार्य करेगी। महाविद्वानों को विद्यार्य सभा का अधिकारी, धार्मिक विद्वानों को धर्म सभाधिकारी, प्रशंसनीय धार्मिक पुरुषों को राज्यसभा के सभासद और जो उनमें सबसे उत्तम गुण, कर्म, सुभाग्युक्त महान् पुरुष हो उसको राज्यसभा का अधिकारी बनाना चाहिए। मंत्रीमण्डल के सम्बन्ध में स्वामी जी का अपना विचार है कि राजा के मंत्रीमण्डल योग्य एवं गुणी व्यक्तियों का निगुण अर्थात् सत्त्व, रज, तम–इन तीनों से परे होना चाहिए।

स्वामी जी के अनुसार राज्य सर्वांग रूप से निरापद और सुरक्षित रहना चाहिए। इसके लिए राज्य की सैन्यशक्ति बड़ी प्रबल दृढ़ और अदभ्य होनी चाहिए। सेना सुशिक्षित, शस्त्रास्त्रों से अजेय और अदम्य होना चाहिए। उसके पास संहारक से संहारक शस्त्रास्त्र होने चाहिए। स्वामी जी ने ऋग्वेद के मंत्र के आधार पर कहा है कि अग्नेयादि अस्त्र, शतघ्नी, भुशुण्डी, धनुष बाण, तलवार आदि अस्त्रों से शत्रुओं को पराजित एवं रोकने का कार्य करना चाहिए।

राजा रक्षित धन को बढ़ाए और बढ़े हुए धन को वेद, विद्या, धर्म का प्रचार, असमर्थ अनाथों के पालन में लगाए। स्वामी जी ने कौटिल्य के अर्थशास्त्र और मनुस्मृति के आधार पर राज्य के आन्तरिक संगठन और प्रशासन के लिए स्वामी दयानन्द ने ग्राम व्यवस्था प्रस्तुत की है। सत्यार्थप्रकाश में लिखा है कि दो, तीन, पाँच और सौ ग्रामों के बीच एक राज्य स्थान रखें जिसमें यथायोग्य राजपुरुषों को रखकर राज्य के सभी कार्यों को पूर्ण करना चाहिए। एक ग्राम में एक प्रधान पुरुष, 10 गाँव में दूसरा,

बीस गाँव में तीसरा, सौ गाँव में चौथा और हजार गाँव में पाँचवाँ पुरुष रखना चाहिए। एक लाख गाँवों पर एक राज्यसभा बनायी जानी चाहिए जो केन्द्रीय महाराजा के अधीन हो। दस हजार गाँवों में दो सभापति होने चाहिए। एक राज्यसभा का सदस्य, दूसरा घूम–फिरकर प्रशासन देखे। प्रत्येक बड़े नगर में विचार के लिए सुन्दर, उच्च विशाल भवन बनाये जाने चाहिए जिससे उसमें विचार–विमर्श करके विद्वान् प्रजा की उन्नति कर सकें। स्वामी दयानन्द राजा तथा मंत्रिपरिषद् के सदस्यों को ईमानदार, सच्चरित्र, वेदशास्त्रों के ज्ञाता होने पर बल देते हैं, जिससे समाज का संचालन सुचारु रूप से हो सके।

महर्षि दयानन्द ने समाज के सुधार के लिए दण्ड की व्यवस्था को आवश्यक माना है। उन्होंने अनेक प्रकार के दण्ड विधान प्रस्तुत किए हैं। उनका विचार है कि मनुष्य को अपराध करने पर दण्ड से सुधारा जा सकता है। स्वामी जी के विचार में न्याययुक्त दण्ड का नाम राजा और धर्म है। जो दण्ड सोच विचारकर दिए जाते हैं वह सब प्रजा को आनन्दित करते हैं। बिना विचारे दिया गया दण्ड राजा का विनाश कर देता है। समाज में दण्ड व्यवस्था अपराध के अनुसार होनी चाहिए। गम्भीर अपराधियों को कठोर दण्ड दिया जाना चाहिए। स्वामी दयानन्द के अनुसार सब जीवों पर दया करना दुःख का कारण होता है। चोर, डाकुओं को कठोर दण्ड देने से श्रेष्ठों का पालन करने में दया और इसके विपरीत करने में दया क्षमारूपी धर्म का नाश होता है।

महर्षि ने प्रजा की अपेक्षा राजा और उसके अधिकारियों को अपराध करने पर कई गुना दण्ड देने की परामर्श दी है। उन्होंने जिस अपराध के लिए साधारण मनुष्य को एक पैसा दण्ड का प्रावधान किया, उसी अपराध पर राजा को सहस्र पैसा दण्ड होना चाहिए। अर्थात् साधारण मनुष्य से राजा को हजार गुना अधिक दण्ड का प्रावधान होना चाहिए। स्वामी जी ने राजा की अत्याचारिता पर अंकुश लगाया है और लिखा है कि राजपुरुष अन्याय से वादी, प्रतिवादि से गुप्त धन लेकर पक्षपात से अन्याय करे तो उसका सर्वस्वहरण करके यथायोग्य दण्ड देकर देश से निर्वासित कर देना चाहिए। स्वामी जी के अनुसार मंत्री अर्थात् राजा के दीवान को आठ सौ गुना, उससे कम को सात सौ गुना तथा उससे कम अपराध करने वाले को छः सौ गुना दण्ड देना चाहिए। एक छोटे से चपरासी को आठ गुना से कम दण्ड नहीं देना चाहिए। स्वामी जी ने लोभ, मोह, भय, मित्रता, काम, क्रोध, अज्ञानी और अल्पायु के बालकों की गवाही को झूठ मानने की सलाह दी है। उन्होंने व्यक्ति की आर्थिक स्थिति के अनुरुप कम या अधिक अर्थदण्ड देने की परामर्श दी है। स्वामी जी के विचार में राजा, रानी या न्यायाधीश या उसकी स्त्री व्याभिचार आदि कुकर्म करे तो सभा को सामान्य व्यक्ति से अधिक दण्ड देना चाहिए। स्वामी जी के विचार में दण्ड व्यवस्था समाज सुधार के लिए आवश्यक है। यदि समाज में दण्ड व्यवस्था नहीं है तो सुचारु रूप से समाज का संचालन नहीं हो सकता। उन्होंने आदर्श दण्ड व्यवस्था का प्रतिपादन समाज सुधार के लिए आवश्यक बताया।

स्वामी दयानन्द ने राजनीतिक सुधार द्वारा हिन्दुओं की क्षीण हो रही शक्ति को संगठित करने का पूरा प्रयास किया। वे स्वराज्य के पक्षधर थे। उनका विचार था कि विदेशियों के शासन के कारण इस देश में नागरिकों का शोषण हो रहा है। स्वामी दयानन्द ने जन्मगत जात–पात छुआछूत संकीर्ण साम्प्रदायिकता, मत–मतान्तरों आदि सामाजिक कुरीतियों को दूर करके राष्ट्र को सुसंगठित करने का प्रयास किया। स्वामी दयानन्द की राष्ट्रवादी विचारधारा से प्रेरित होकर बालगंगाधर तिलक, रामप्रसाद विस्मिल, भगत सिंह, लाला लाजपतराय, महामना पं. मदन मोहन मालवीय आदि ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

राजकीय महाविद्यालय कैम्पियरगंज (गोरखपुर)
मो. 9415592187

☞ पृष्ठ 05 का शेष

सत्यार्थ प्रकाश के 12वें समुल्लास ...

'मुक्त' क्यों कहा जा सकता है? और जो एकदेशी जीव हैं वे ही बद्ध और मुक्त सदा हुआ करते हैं। अनन्त, सर्वदेशी, सर्वव्यापक ईश्वर बन्धन वा नैमित्तिक मुक्ति के चक्र में...कभी नहीं पड़ता। इसलिये वह परमात्मा 'सदैव मुक्त' कहाता है।

93. जैसे बिना राजा के डाकू, लम्पट, चोरादि दुष्ट मनुष्य स्वयं फाँसी वा कारागृह में नहीं जाते, न वे जाना चाहते हैं किन्तु राज की न्याय–व्यवस्थानुसार बलात्कार से पकड़ाकर यथोचित राजा दण्ड देता है, इसी प्रकार जीव को भी ईश्वर न्याय–व्यवस्था से स्व–स्व कर्मानुसार यथायोग्य दण्ड देता है। क्योंकि कोई भी जीव अपने दुष्ट कर्मों के फल भोगना नहीं चाहता इसलिये अवश्य परमात्मा न्यायाधीश होना चाहिये।

94. जो प्रथम बद्ध होकर मुक्त हो तो पुनः बन्ध में अवश्य पड़े, क्योंकि वे स्वाभाविक सदैव मुक्त नहीं।

95. बिना कर्त्ता के कोई कर्म, कर्म के बिना कोई कार्य जगत् में होता दीखता है? यह ऐसी बात है कि जैसे गेहूँ के खेत में स्वयं–सिद्ध पिसान, रोटी बन के.. .पेट में चली जाती हो। कपास, सूत, कपड़ा, अंगर्खा, दुपट्टा, धोती, पगड़ी आदि बनके कभी नहीं आते। जब ऐसा है तो ईश्वर कर्त्ता के बिना यह विविध जगत् और नाना प्रकार की रचना विशेष कैसे बन सकती?

96. परमेश्वर में वैराग्य वा मोह कभी नहीं घट सकता क्योंकि जो सर्वव्यापक है वह किसको छोड़े और किसको ग्रहण करे? ईश्वर से उत्तम वा उसको अप्राप्त कोई पदार्थ नहीं है इसलिये किसी में मोह भी नहीं होता। वैराग्य और मोह का होना जीव में घटता है। ईश्वर में नहीं।

97. जगत् का (उपादान) कारण अनादि है क्योंकि वे परमाणु आदि तत्त्व–स्वरूप अकर्तृक हैं, परन्तु उनमें नियमपूर्वक बनने वा बिगड़ने का सामर्थ्य कुछ भी नहीं।

98. पृथिवी, सूर्यादि सब लोकों को नियम में रखना अनन्त, अनादि, चेतन परमात्मा का काम है।

99. जिनमें संयोग रचना विशेष दीखता है वह स्थूल जगत् अनादि कभी नहीं हो सकता।

100. कर्त्ता का कर्त्ता और कारण का कारण कोई भी नहीं हो सकता क्योंकि प्रथम कर्त्ता और कारण के होने से ही 'कार्य' होता है।

101. जिसमें संयोग–वियोग नहीं होता, जो प्रथम संयोग–वियोग का कारण है उसका कर्त्ता वा कारण किसी प्रकार नहीं हो सकता।

102. जो जीवों को अनादि मानते हैं यह तो ठीक है, परन्तु उसी अल्प और अल्पज्ञ जीव को मुक्ति–दशा में सर्वज्ञ मानना झूठ है। क्योंकि जो अल्प और अल्पज्ञ है उसका सामर्थ्य भी सर्वदा ससीम रहेगा।

103. जीव और कर्म का सम्बन्ध छिलके और बीज के समान नहीं है किन्तु इनका समवाय सम्बन्ध है। इससे अनादि काल से जीव और उसमें कर्म और कर्तृत्व–शक्ति का सम्बन्ध है। जो उसमें कर्म करने की शक्ति का भी अभाव मानोगे तो सब जीव पाषाणवत् हो जायेंगे और मुक्ति को भोगने का ही सामर्थ्य नहीं रहेगा।

104. साधनों से सिद्ध हुआ पदार्थ नित्य कभी नहीं हो सकता।

105. जैसे दूध और खटाई को मिलाने वाला तीसरा होता है वैसे ही जीवों को कर्मों के फल के साथ मिलाने वाला तीसरा ईश्वर होना चाहिए। क्योंकि जड़ पदार्थ स्वयं नियम से संयुक्त नहीं होते और जीव भी अल्पज्ञ होने से स्वयम् अपने कर्मफल को प्राप्त नहीं हो सकते। इससे यह सिद्ध हुआ कि बिना ईश्वर–स्थापित सृष्टिक्रम के कर्मफल–व्यवस्था नहीं हो सकती।

106. जीव चाहे जैसा अपना ज्ञान और सामर्थ्य बढ़ावे तो भी उसमें परिमित ज्ञान और ससीम सामर्थ्य रहेगा। ईश्वर के समान कभी नहीं हो सकता। हाँ, जितना सामर्थ्य बढ़ना उचित है उतना योग से बढ़ा सकता है।

107. जीव एक सूक्ष्म पदार्थ है जो कि एक परमाणु में भी रह सकता है, परन्तु उसकी शक्तियाँ शरीर में प्राण, बिजुली और नाड़ी आदि के साथ संयुक्त हो रहती हैं। उनसे सब शरीर का वर्त्तमान जानता है। अच्छे संग से अच्छा और बुरे संग से बुरा हो जाता है।

108. जब मनुष्यमात्र पर दया नहीं वह दया न क्षमा। ज्ञान के बदले अज्ञान दर्शन अन्धेरे और चारित्र के बदले भूखे मरना कौन–सी अच्छी बात है?

109. पाप–पुण्य करने का स्वभाव चेतन में होता है। ... ये जितने जड़ पदार्थ हैं वे सब पाप–पुण्य से रहित हैं।

8–17 टाऊनशिप, पो. नर्मदानगर, जि. भरूच, गुजरात–392015, मो. 9879528247

पत्र/कविता

'रन फॉर नैशनलिज्म'

यह सुखद है कि आधुनिक भारत के शिल्पी सरदार पटेल की 182 फीट ऊंची प्रतिमा का अनावरण करके प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने एक कर्तव्यनिष्ठ सशक्त राजनेता को अभूतपूर्व श्रद्धांजलि अर्पित की है। इस प्रकार से उन्होंने करोड़ों नवयुवकों में राष्ट्र के प्रति सजग व समर्पित रहने का भी एक सशक्त संदेश दिया है। निसंदेह राष्ट्रप्रेम के प्रति देशवासियों को तरंगित करने का यह माध्यम सफल हुआ। इससे देशवासियों में सुदृढ़ व समर्थ भारत निर्माण के प्रति और अधिक संवेदनशीलता जागृत हुई है।

हमको स्मरण रखना होगा कि आज देश की बर्बादी तक जंग जारी रहेगी और भारत तेरे टुकड़े होंगे की चाहना वाले हजारों युवा और तथाकथित बुद्धिजीवी अभी सक्रिय है। ऐसे राष्ट्रविरोधी तत्त्व सक्रिय है जो मुख्यतः युवा पीढ़ी में देश के प्रति नकारात्मक भाव भरने के लिये अनेक षडयंत्रकारी उपक्रमों में लिप्त है। ऐसे भारतविरोधी षडयंत्रकारियों को अभी तक बंधक नही बनाया गया बल्कि इनके कुछ नेताओं को तो मंचो पर सम्मानित किया जाता है। क्या ऐसी विपरीत परिस्थिति में "रन फ़ॉर यूनिटी" के लिये संकल्पित नेताओं, वरिष्ठ नागरिकों और युवाओं द्वारा राष्ट्रीय एकता और अखंडता का लक्ष्य पूर्ण हो पायेगा?

धरातल पर कुछ ऐसा करना होगा, जिससे देश के टुकड़े–टुकड़े करने की चाहत रखने वालों के गैंग पर कठोर न्यायायिक कार्यवाही करके उनको कारागार में डाला जा सके। राष्ट्रवादी जनता को आस्तीन में पलने वाले सांपों का ज्ञान हो और फिर वे उनके प्रति सक्रिय भी हो सकें?

देश की संप्रभुता, एकता और अखंडता के प्रति लाखों–करोड़ों देशभक्त एकजुट हो जाए तो हमारी मातृभूमि के शत्रुओं का विनाश निश्चित ही होगा। हम सभी राष्ट्रवादियों की सरदार पटेल सहित समस्त धर्मबलिदानियों के प्रति यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी कि "भारत अखंड, अजेय और अमर रहें।"

विनोद कुमार सर्वोदय
गाज़ियाबाद
guptavinod038@gmail.com

****

जगत को आर्य बनाओ

ऋषियों का यह देश था, आर्यवर्त्त महान।
देता था संसार को, पावन वैदिक ज्ञान।।
पावन वैदिक ज्ञान, करे कल्याण जगत का।
वेद ज्ञान से हुआ, सुनों! उत्थान जगत का।।
गौतम कपिल कनाद, हुए ऋषि वैदिक ज्ञाता।
सच्चे ईश्वर भक्त, सन्त जीवन निर्माता।।
जगत गुरु दयानन्द ने, किया गजब का काम।
वेदों का प्रचार कर, किया जगत में नाम।।
किया जगत में नाम, मौत का खौफ न खाया।
पी–पी करके जहर, सन्त ने जगत जगाया।।
झेले भारी कष्ट, नहीं योगी घबराया।
ऐसा अद्भुत सन्त, नहीं दुनियाँ में आया।।
आर्यवर्त्त में हो गया, पाखण्डियों का जोर।
वेद विरोधी नास्तिक, मचा रहे हैं शोर।।
मचा रहे हैं शोर, पाप–पापी करते हैं।
हुए स्वार्थ में लिप्त, न ईश्वर से डरते हैं।।
यहाँ हजारों धूर्त, पड़े हैं अब जेलों में।
फिर भी लाखों मूढ़, सम्मिलित हैं चेलों में।।
बुराड़ी दिल्ली का सुनों, समाचार धर ध्यान।
मरे अंधविश्वास में, ग्यारह जन नादान।।
ग्यारह जन नादान, ढोंगियों ने मरवाए।
वेदों का सन्देश, अभागे समझ न पाए।।
व्यर्थ न देते जान, वेद पथ अगर जानते।
ऋषि दयानन्द महान, सन्त को अगर मानते।।
जागो, प्यारे आर्यो! करो वेद प्रचार।
बिना वेद प्रचार के, होगा नहीं सुधार।।
होगा नहीं सुधार, समझ लो धर्म साथयो!
यदि चाहो कल्याण, करो शुभ कर्म साथियों।
देव दयानन्द बनो, जगत में धूम मचाओ।
"नन्दलाल" बन आर्य, विश्व को आर्य बनाओ।।

पं. नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक पत्रकार
आर्य सदन बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा)
मो. 9813845774

देश की अखंडता हेतु 'जनसंख्या नियंत्रण कानून' बनना चाहिए!

अखिल भारतीय संत परिषद के राष्ट्रीय संयोजक यति नरसिंहानंद सरस्वती देश में 'जनसंख्या नियंत्रण कानून' बनाने की माँग करते हुए 1 नवंबर 2018 से आमरण अनशयान करने बैठे हैं। देश के संतों को इस प्रकार का कानून बनाने की माँग के लिए आमरण अनशन के लिए बैठना पडता है, यह हिन्दुत्व के नाम पर और हिन्दुओं के मतों से चुनकर आई केंद्र सरकार के लिए लज्जाजनक है। अतः राष्ट्ररक्षा के लिए आरंभ किए उनके इस अभियान को हिन्दू जनजागृति समिति का समर्थन है। हिन्दू जनजागृति समिति के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री रमेश शिंदे ने प्रतिपादित किया कि देश का धार्मिक सामंजस्य, सामाजिक सुरक्षा और देश की अखंडता बनाए रखने के लिए 'जनसंख्या नियंत्रण कानून' बनना ही चाहिए।

श्री शिंदे यह भी बोले कि, देश में जनसंख्या नियंत्रण के लिए सभी धर्मियों के लिए समान कानून ने होने के कारण अल्पसंख्यकों की जनसंख्या बढ़ती जा रही है। वर्तमान स्थिति में जम्मू–कश्मीर, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मेघालय, मिजोरम और मणिपुर आदि राज्य तथा केंद्रशासित प्रदेश लक्षद्वीप एवं निकोबार में हिन्दू अल्पसंख्यक हो गए हैं। अनेक अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं ने भी दावा किया है कि, यदि यही स्थिति बनी रही, तो वर्ष 2030 से पूर्व भारत में हिन्दू अल्पसंख्यक हो जाएँगे। भारत में 'हम दो, हमारे दो' जनसंख्या नियंत्रण का यह संदेश केवल हिन्दुओं को दिया जाता है; इसलिए 'जनसंख्या नियंत्रण और संतुलन' बनाए रखनेवाला कानून सभी धर्मियों को लागू करना चाहिए, यह काल की आवश्यकता है।

यति नरसिंहानंद सरस्वतीजी द्वारा आरंभ किए गए अनशन की ओर केंद्र और राज्य शासन में से किसी ने भी ध्यान नहीं दिया है, यह चिंताजनक है। कुछ समय पूर्व ही प्रा. जी.डी. अग्रवाल उपाख्य स्वामी सानंदजी ने गंगा नदी को प्रदूषण मुक्त करने के लिए 111 दिन आमरण अनशन किया था। तत्पश्चात् उनका देहांत हो गया। तब भी केंद्र शासन से उस ओर ध्यान नहीं दिया। श्री शिंदे ने आवाहन किया कि 'जनसंख्या नियंत्रण कानून' बनाने के लिए जनआंदोलन करें तथा शासन को कानून के लिए बाध्य करें तथा इस हिन्दू आंदोलन में समस्त हिन्दू बंधू यथाशक्ति सम्मिलित हों।

श्री रमेश शिंदे,
राष्ट्रीय प्रवक्ता, हिन्दू जनजागृति समिति
मो. 9987966666

****

जय श्रीराम को मत बदनाम करो

भगवान राम भारतीय संस्कृति व विश्वमानवता के कल्याण हेतु प्रमुख प्रतीक है। मत अपनी निजि स्वार्थ लाभ वोट बैंक लाभ हेतु सत्ता हथियाने के खातिर राजनीति में मुद्दा लेकर मत बदनाम करो।

जय श्रीराम का सन्देश है काम, क्रोध, लोग, मोह व अहंकार को त्याग सारे संसार के लिए कल्याण करो।

मत भगवान का नाम देश की गन्दी, भष्ट व अपराधीकरण वाली राजनीति में लेकर इसको बदनाम मत करो।

समाज, देश व राष्ट्र में अनेक समस्यायें हैं जैसे गरीबी, बेरोजगारी, भुखमारी, कमरतोड़ मंहगाई, भष्टाचार, अनुशासनहीनता, अज्ञानता, नक्सलवाद, आंतकवाद, अन्धविश्वास व सामप्रदायिक दंगे फसाद को खत्म व रोकने के लिए एक जुट होकर ध्यान करो।

इसी में भलाई है सबकी व सम्मान भगवान श्रीराम की।

इसका अनुसरण करके जय जय गुणगान करो।

देशबन्धु
सन्तोष पार्क उत्तम नगर,
नई दिल्ली–110059

****

सोहन लाल डी.ए.वी. कॉलेज, अम्बाला में देश भक्ति गायन प्रतियोगिता

प्राचार्य डॉ. विवेक कोहली के कुशल नेतृत्व में छात्राध्यापकों में देशभक्ति की भावना विकसित करने के लिए सोहन लाल डी.ए.वी. शिक्षा महाविद्यालय में देशभक्ति गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के सभी छात्राध्यापकों ने इस प्रतियोगिता में बढ़–चढ़ कर भाग लिया। प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल की भूमिका डॉ. नीलम लूथरा और डॉ. पूजा ने निभाई। मुख्यअतिथि के रूप में डॉ. महेश मनोचा

संयोजक, गीता प्रेम संकल्प और श्री वी.के. शर्मा सैक्रेटेरी, गीता प्रेम संकल्प ने कार्यक्रम में शिरकत की व विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरित किए। प्रतियोगिता को दो भागों (संस्कृत भाषा और हिन्दी भाषा) में विभाजित किया गया। जिसके परिणाम इस प्रकार रहे।

संस्कृत भाषा गायन में प्रथम स्थान मनोज, द्वितीय स्थान अमित कुमार ने प्राप्त किया। हिन्दी भाषा गायने में प्रथम स्थान रविकांत और तृतीय–आस्था, कमलजीत ने प्राप्त किया।

डी.ए.वी. शिक्षा महाविद्यालय, अबोहर ने जीती ओवर ऑल ट्रॉफी

महाविद्यालय, अबोहर ने तीन दिवसीय युवा महोत्सव में 21 प्रतिस्पर्धाओं में शानदार प्रदर्शन करके ओवरऑल ट्रॉफी का खिताब जीता। गुरु गोविंद सिंह कॉलेज ऑफ एजुकेशन, थेहडी (मलोट) में युवा महोत्सव यूथ वेलफेयर के डायरेक्टर डॉ. निर्मल जोड़ा के कुशल नेतृत्व में संपन्न हुआ। प्राचार्या महोदया डॉ. श्रीमती उर्मिल सेठी ने इस गौरवशाली जीत के बारे में बताते हुए कहा कि परमात्मा के आशीर्वाद और विद्यार्थियों तथा स्टॉफ की कड़ी मेहनत के परिणाम स्वरूप डी.

ए.वी. शिक्षा महाविद्यालय, अबोहर ने न केवल अकादमिक और सामाजिक बल्कि विरासती, सांस्कृति, ललित कलाओं, पंजाब लोक नाच और थिएटर में भी अपनी जीत का लोहा मनवाया है। तीन दिवसीय युवा महोत्सव में डी.ए.वी. शिक्षा महाविद्यालय, अबोहर के विद्यार्थियों ने हर प्रतियोगिता में अच्छा स्थान प्राप्त किया। मैडम प्राचार्या डॉ. (श्रीमती) उर्मिल सेठी ने तथा यूथ सर्विस क्लब के इंचार्ज श्रीमान अजय खोसला ने विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया। प्राचार्या ने आगामी इंटर जोनल मुकाबले में शानदार प्रदर्शन करने के लिए विद्यार्थियों को कड़ी मेहनत करने की प्रेरणा दी।

आर्य समाज अलवर में कार्तिक मासीय यज्ञ की पूर्णाहुति

कार्तिक मासीय यज्ञ की पूर्णाहुति पं. अमर मुनि एवं पं. शिव कुमार कौशिक, श्री रघुवीर आर्य के सानिध्य में वेद मंत्रों से पूर्ण हुई।

तदुपरान्त भजन एवं वेदोपदेश हुए। प्रसिद्ध भजनोपदेशक एवं अनेक विद्वानों ने अपने सारगर्भित वेदोपदेश एवं संगीतमय प्रस्तुतियों देकर आर्यजनों को लाभान्वित किया।

इसके साथ–साथ आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर का 115वाँ वार्षिकोत्सव एवं 28वाँ कार्तिक मासीय यज्ञ कै. रघुनाथ सिंह जी के संरक्षण एवं आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के पूर्व महामंत्री

श्री अमर मुनि जी की अध्यक्षता में समारोह पूर्वक मनाया गया। इस समारोह में मुख्य अतिथि श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता–प्रधान आर्य कन्या विद्यालय समिति एवं विशिष्ट अतिथि श्री सत्यपाल आर्य, श्री सन्तोष कुमार अरोडा, श्री सत्यवीर आर्य रहे।

इस अवसर पर श्री अमर मुनि जी ने कहा कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है वेद का पढ़ना– पढ़ना सभी आर्यो का परम धर्म है।

श्री प्रदीप कुमार आर्य–प्रधान, आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग ने सभी का धन्यवाद करते हुए आभार व्यक्त किया।

भजन एवं वेदोपदेश उपरान्त 5000 लोगों ने ऋषि लंगर में प्रसाद ग्रहण किया।

☞ पृष्ठ 01 का शेष

डी.ए.वी. नाभा में ...

करते हुए यज्ञ में आहुतियाँ प्रदान की व स्वामी दयानन्द के बताए रास्ते, वैदिक विचारधारा का अनुकरण करने की प्रेरणा ली और साथ में बन्दी छोड़ दिवस के अवसर पर शब्द गायन किया गया।

उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि हमें सभी पर्वों को जात पात के भेदभाव के बिना मिलजुल कर मनाना चाहिए और सबमें परस्पर भाईचारे की भावना पैदा करनी चाहिए।

अंत में सभी को प्रसाद वितरण कर और शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 05/06-12-2018

बी.बी.के. डी.ए.वी. कॉलेज फॉर विमेन अमृतसर में 'ऋषि निर्वाण दिवस'

युगदृष्टा एवं युगसृष्टा महर्षि दयानन्द सरस्वती के स्वप्न को साकार करते हुए बी.बी.के. डी.ए.वी. कॉलेज फॉर विमेन, अमृतसर की 'आर्य युवती सभा' द्वारा कॉलेज प्रागंण में 'ऋषि निर्वाण दिवस' को समर्पित 'वैदिक यज्ञ' का आयोजन किया गया, जिसमें श्री सुदर्शन कपूर (अध्यक्ष, स्थानीय प्रबंधकर्त्री समिति) मुख्य यजमान की भूमिका निभाई।

कॉलेज प्राचार्या डॉ. पुष्पिंदर वालिया उपस्थिति एवं अतिथियों का भव्य स्वागत करते हुए कहा कि आर्य समाज के मूल्य समाज के लिए बहुत ही उपयोगी है। आर्य समाज का उद्देश्य समाज में फैली कुरीतियों तथा झूठे आडम्बरों को दूर करना है। स्वामी दयानन्द को सच्ची श्रद्धांजलि देने के लिए आर्य समाज द्वारा डी.ए.वी. की नींव रखी आज पूरे विश्व में 900 से अधिक डी.ए.वी. की शाखाएँ है जोकि एक वट वृक्ष बन चुकी हैं। आर्य समाज सच्ची निष्ठा एवं परित्याग की भावना पर टिका हुआ है। आपने छंात्राओं को सहर्ष बताया कि कॉलेज द्वारा 19 वर्षो के बाद गुरू नानक देव विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित यूथ फैस्ट में ऑवर ऑल इंटर ज़ोनल चैम्पियनशिप ट्रॉफी प्राप्त की गई है तथा आशा व्यक्त की कि भविष्य में भी इसी प्रकार कॉलेज उन्नति के पथ पर अग्रसर रहेगा।

डॉ. वी.पी. लखनपाल ने इस अवसर पर कॉलेज प्राचार्या डॉ. पुष्पिंदर वालिया को कॉलेज की इस अद्वितीय उपलब्धि के लिए बधाई दी। आपने छात्राओं को यज्ञ का महत्व बताते हुए इसके आध्यात्मिक, वैज्ञानिक तथा सामाजिक मूल्यों से अवगत कराया। कॉलेज के संगीत विभाग की ओर से इस पावन वेला में सुन्दर भजन प्रस्तुत किया गया। शान्तिपाठ के साथ हवन यज्ञ सम्पन्न हुआ।

जे.एन.जे. डी.ए.वी. गिदड़बाहा में मनाया गया बाल दिवस

जगननाथजैनडी.ए.वी.सै.पब्लिक स्कूल, गिदड़बाहा की प्रिंसीपल मोनिका खन्ना के दिशा निर्देश में प्रथम प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू जी का जन्मदिवस (चिल्ड्रन–डे) मनाया गया। बच्चों ने रंग बिरंगी ड्रैसें डाली थीं। जिस कारण वह रंग–बिरंगे फूलों की तरह दिख रहे थे। प्रिंसीपल मोनिका खन्ना ने कहा कि बच्चें दुनिया रूपी–बाग के सबसे खुबसूरत फूल हैं। अध्यापक इन फूलों के खिलने और महकने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने कहा कि हमें जीवन में तरक्की के लिए अधिक मन लगाकर पढ़ना चाहिए और बच्चों को प. जवाहरलाल नेहरू के आदर्श चिन्हों पर चलकर अपने जीवन को सफल बनाने की कोशिश करनी चाहिए तभी हमारा देश दिन दुगनी रात चौगनी उन्नति करेगा। इस अवसर पर स्कूल के चेयरमैन श्री रघुवीर सिंह, रीजनल अधिकारी नीलम कामरा व मैनेजर सतवंत कौर भुल्लर ने भी शुभाशीष दिये।

डी.ए.वी. पटियाला द्वारा 'पूर्व छात्र संस्था' का निर्माण

डी.ए.वी. संस्था अपने पूर्व विद्यार्थियों को सम्मानित करके उन्हें जीवन में आगे बढ़ने को प्रेरणा देती रहती है। इसी का परिचय देते हुए डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल भुपिन्द्रा रोड पटियाला अपने पूर्व विद्यार्थियों को सम्मान देते हुए 'पूर्व छात्र संस्था' का निर्माण किया गया। ये एक बड़ा ही सुखद क्षण था, जब सैंकडों पुराने साथी स्कूल प्रांगण में इकठे हुए। ओपचारिक रूप से चयनित इस सभा सदस्यों ने कार्यक्रम को मनोरंजक बनाते हुए सुव्यवस्थित तरीके से आगे बढाया। प्रतिभावान कर्मठ विद्यार्थियों के साथ–साथ शिक्षकवृन्द ने कार्यक्रम की शोभा बढाई।

समारोह में अपनी रंगारंग प्रस्तुति से समय बाँध दिया और फिर बच्चों ने अपने–अपने क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धियों का वर्णन किया। प्राचार्य विवेक तिवारी ने सभी पूर्व विद्यार्थियों का स्वागत किया तथा अपने सम्बोधन में कहा, "हमें अपने पूर्व विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए गर्व अनुभव हो रहा है। हमें खुशी है कि डी.ए.वी. पटियाला की उपज आज जीवन में सफलताओं को प्राप्त कर उच्च शिखर पर हैं। आगे उन्होंने पूर्व विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा को समाज कल्याण के लिए प्रेरित किया। प्राचार्य तिवारी के आहवान पर बच्चों ने स्कूल की इकाई 'आर्य युवा समाज' के साथ जुड़ते हुए अन्य विद्यार्थियों को भी इसके साथ जोड़कर समाज सेवा के कार्य करने का विश्वास दिलाया। श्रीमती नीरा खुराना ने अपनी खुशी प्रकट करते हुए कहा कि ये हमारे लिए बड़े सम्मान की बात है कि शिक्षा क्षेत्र में अपनी सेवाओं के लिए विश्व स्तर पर विख्यात हैं।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**